प्रेम पत्र

प्यारे अटल बिहारी जी वाजपेयी

सादर प्रणाम !

जब से आप विदेश मंत्री बने तब से मैं आपके चाहने वालों में शामिल हो गया । असल में मैं तब से आपको चाहता हूं जब से आपकी रीढ की हड्डी में दर्द उठना शुरू हुआ । उसका कारण यह है कि मेरी रीढ की हड्डी में भी ठीक उसी तरह का दर्द उठता है । इसलिये जब आप अपना सुई वाला इलाज कराने चीन जायें, मुझे साथ अवश्य ले चलियेगा ।

आपने चार भकारों का जिक्र किया । यह पढ़ कर दुःख हुआ । मुझे आपके वह शब्द याद हैं जब आपने अपने चुनाव भाषण में कहा था कि "भारत के भूतपू[र्व] रक्षा मंत्री बन्सी लाल भारत की सीमा केवल हरियाणा तक समझते हैं ।" आप[की] विदेश नीति यदि केवल चार भकारों अर्थात् "भ्रान्ति निवारण, भ्रमण, भाषण औ[र] भोजन" तक ही सीमित है तो मैं समझता कि आप बहुत भ्रम में हैं और भारत क[ी] विदेश नीति का भर्था बन जाने का खतरा है । यदि आपके मंत्रालय के सभी लोग भोजन में ही लगे रहे तो भजन कब होगा और इससे भ्रष्टाचार बढ़ जायेगा । देश की नैया भंवर में पड़ जायेगी । हो सकता है हमारे मित्र देश भटकने लगें और उनमें भगदड़ पड़ जाये । इससे विदेश नीति में काफी भद्दापन आ जायेगा और उसके भविष्य पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकेगा ।

यदि चाणक्यपुरी में रहने वाले दूतों को इस बात की भनक पड़ गई कि आपके मंत्रालय में भतीजे और भानजे सारे समय सैर-सपाटे के भत्ते के चक्कर में घूमते हैं तब मंत्रालय का भंडाफोड़ हो जायेगा और अधिकतर कर्मचारियों को भाँग पीकर भस्म रमानी पड़ेगी । या फिर किसी और मंत्रालय में भर्ती होना पड़ेगा और मुर्ग-मुसल्लम की बजाय भाजी खानी पड़ेगी । हम सब का भला इस बात में ही है कि आप भूतकाल, भूमि और भेड़चाल को भूल जायें और नया देश बना कर भूचाल वाले देशों से भी भेद-भाव मिटा डालें । सबसे भेंट करें और देश का भाग्य उज्जवल करें ।

एक सुझाव आपकी सेवा में रखना चाहता हूं । जब-जब आप भयभीत हो जायें तब-तब भगवती देवी इन्दिरा से विदेश नीति की राय पूछ लें । इससे देश कभी भिखारी नहीं बनेगा ।

आपका

भोला चिल्ली
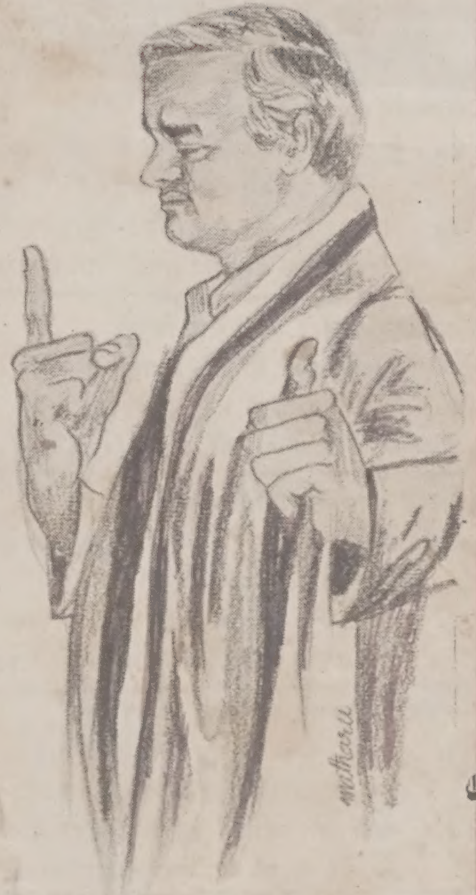
मुख पृष्ठ पर

रामू, श्यामू, भईया, बहना
मानो तुम चिल्ली का कहना,
सब को मिले बराबर हिस्सा
छोटा सा सुन लो यह किस्सा,
दो मिले तो एक ही खाओ
दाना दाना अन्न बचाओ,
नहीं पड़े फिर कभी अकाल
चिल्ली जैसा करो कमाल ।

अंक : २२, ९ जून से १५ जून १९७७ तक
वर्ष : १३

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
उपसहसम्पादक : कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज़ साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-2

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें । हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा । रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें । —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवानों के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

लीलाधर पारीख, बीकानेर

प्र० : काकाजी, अगर आपके तीन से ज्यादा बच्चे हों तो डाक्टर 'झटका' से नसबन्दी करा लीजिए।

उ० : राय आपकी ठीक है काका हैं तैयार
'राजनरायन' देंय यदि हमको पांच हजार।

गिरीराज सरवरी, रानी बाग-दिल्ली

प्र० : असफल प्रेमी की क्या निशानी है काका ?

उ० : चाल निराशा से भरी, रूखे लम्बे बाल,
गड्ढों में आंखें धंसी, पिचके-पिचके गाल।

हीरा 'घायल' इन्दौरी, इन्दौर

प्र० : प्रेमी-प्रेमिका प्यार की रंगीन दुनिया में खोए हुए हों और प्रेमी की पत्नी आ जाए तो ?

उ० : समझो ऐसे समय में, बहुत भयंकर रिस्क
'घायल' को घायल करे, भूल जाए सब इश्क।

चंचल मांगीलाल, श्यामसिंह, नाथद्वारा

प्र० : दीवानों के वास्ते, यह अनुचित है साब
एक रूपैया कर दिया 'दीवाना' का भाव।

उ० : आब्जेक्शन क्यों कर रहे, इस कीमत में आप
घर बैठे सौ रुपे का, मजा लेंय चुपचाप।

नीलू हेम राजिनी, जयपुर

प्र० : सुहागिन औरत का चिन्ह सिंदूर है तो मर्द का ?

उ० : क्या बतलाएं चिन्ह, उस बेचारे का हाल
बिखरे-बिखरे बाल हैं, उखड़ी-उखड़ी चाल।

कृष्ण रेहानी, कश्मीरी गेट, दिल्ली

प्र० : रोने के समय आंसू निकलते हैं, कभी-कभी हंसने पर भी आंसू क्यों निकलते हैं ?

उ० : मन का यह उद्वेग है लंबा तर्क-वितर्क
रंज-खुशी-वात्सल्य के, अश्रु कणों में फर्क।

जीवन शिन्दे, जेलरोड (इन्दौर)

प्र० : आपकी कविताएं किस गति से तैयार होती हैं ?

उ० : जिस गति से होती रहे, प्रश्नों की बौछार
बन जाती वैसी स्वतः कविता की रफ्तार।

सोहनलाल परिहार, बेंगलौर

प्र० : मेरी प्रेमिका की शादी मुझसे हो जाय, उनके मां-बाप से कैसे कहूं ?

उ० : यदि वयस्क दोनों हैं बेटी और बेटा जी
कहदो, आज्ञा दे देंगे, मम्मी और पापा जी।

रामावतार अग्रवाल, रायगढ़

प्र० : मनुष्य पैदा होता है तो रोता है, मरता है तो रुला ऐसा क्यों ?

उ० : हम ऐसी बेवकूफी हरगिज नहीं करेंगे
हंसते हुए आए हैं, हँसाते हुए मरेंगे।

नंदलाल शर्मा बागड़ा, सुजानगढ़

प्र० : आपके भतीजे-भतीजियों की संख्या कहां कहां कितनी

उ० : क्या पता नीयत का हमको, पहुंच जाओ तुम कहीं,
इसलिए उनका पता तुम को बता सकते नहीं।

कुबेरदत्त भारद्वाज, मुजफ्फरनगर

प्र० : आप मस्तक पर चंदन का टीका क्यों लगाते हैं ?

उ० : मौलाना हमको समझ, कहें 'सलाम हजूर'
चंदन लखि वंदन करें, हो जाए भ्रम दूर।

नारायण शर्मा, दुलियाजान (असम)

प्र० : नई कविता में क्या विशेषता होती है ?

उ० : कविजी भी जिसका स्वयं, समझ न पाएं अर्थ
उसे नई कविता कहें, शब्दाडंबर व्यर्थ।

केवलकुमारी, काशीपुर (नैनीताल)

प्र० : पानी की प्यास कैसे बुझती है काका ?

उ० : राइटिंग पहचान लें, कितने बदलो नाम
आज कुमारी बन गए, बेटा केवलराम

सुरेन्द्र कुमार सचदेवा, सिरसा (हिसार)

प्र० : दो दिल मिलने के बाद बिछुड़ जाते हैं तो उनकी याद बनी रहती है ?

उ० : नाशवान है तन बदन, जीव अमर है तात,
दिल से दिल मिल जाय जब, रूहें करतीं बात।

सुशील कुमार अकेला, खगड़िया

प्र० : हास्य की कसौटी क्या है ?

उ० : रंज की कसौटी है रुलाना,
हास्य की कसौटी है 'दीवाना'।

बलराम और श्रीकृष्ण, बीरगंज (नेपाल)

प्र० : मनुष्य के पास सबसे ऊंची वस्तु क्या है ?

उ० : ऊंचा साबित कीजिए, ऊंची गप्पें हांक
ऊंचा मानव है वही, जिसकी ऊंची नाक।

अशोक फौजदार, धमतरि (म० प्र०)

प्र० : आपकी एक लाख की लॉटरी निकल जाए तो ?

उ० : एक लाख की लॉटरी, ईश्वर देय निकाल
एक रूपैया आपको, भिजवादें तत्काल।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

रोपकारी तुमसे एक
राय लेनी थी ?

हां हां, मैं क्या सेवा
कर सकता हूं।

वो मेरी बीवी है न ? बड़ी झगड़ालू और मुँह
फट है। मैं उससे तलाक लेना चाहता हूँ और
कोई रास्ता नहीं और यह काम सिर्फ तुम
कर सकते हो।

सोच लो और
कोई रास्ता
नहीं ?

हीं, डरते क्यों हो परोपकारी, वह
म्हें कुछ नहीं कहेगी। सिर्फ तुम
सकी राय के बारे में पता कर दो।
तलाक तो मैंने उसे देनी ही है।

अच्छा भई, तुम भी क्या
याद करोगे, कल ही पता
कर दूंगा।

...ताकि मैं किसी जवान बालों
ाले, जनसेवक से शादी कर
र सकूं। अब तो खुश हो न ?

क्या कहा ?

और दीवाने कार्यों में सहयोग दीजिये

आपको पता ही होगा कि जनता पार्टी ने निश्चय किया है कि वह कम्पनियों से चन्दा नहीं मांगेगी। चुनाव लड़ने के लिए वह जनता से धन एकत्रित करेगी। इस कार्य के लिए वह एक रु०, दो रु०, पांच रु०, दस रु०, बीस रु०, पचास रु० तथा सौ रुपए के कूपन जारी करेगी जिसे आम व्यक्ति जिन्हें जनता पार्टी में आस्था है अपने समर्थ अनुसार खरीदेंगे। इसी प्रकार हो सकता है दूसरे कार्यों के लिए भी जनता पार्टी भविष्य में कूपनों द्वारा चन्दा वसूल करे। इसी आइडिये से प्रभावित होकर हम जनता पार्टी के भावी कूपनों का डिजायन तथा उनका उद्देश्य अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

कनौडिया सरसों का तेल
४२७
1
1
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
एक पैसा
जनता पार्टी
कूपन नं०४२७
नाम दाता
पता
श्री राजनारायण के रोजाना मालिश के लिये खालिस सरसों तेल फंड

७९९९
2
2
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
दो पैसे
जनता पार्टी
कू० नं० ७९९९
नाम दाता
पता
श्री मोरारजी के लिये (रोज ८००० लैटर खोलने के लिये) लैटर ओपनर फंड

९९७१
3
3
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
तीन पैसे
जनता पार्टी
कू० नं०९९७१
नाम दाता
पता
श्री अटल बिहारी बाजपेयी के लिये कवितायें लिखने के लिये रफ कापी के लिये चंदा

००७
3
3
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
३ पैसे
जनता पार्टी
कू० नं०_००७
नाम दाता
पता
श्री सुब्राह्मणयम स्वामी का मुँह बंद रखने के लिये टेप-फंड
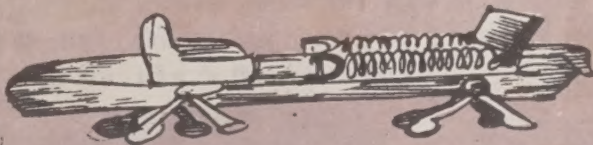
४०२
10
10
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
दस पैसे
जनता पार्टी
कूपन नं०४०२
नाम दाता
पता
श्री पीलू मोदी का मोटापा घटाने के लिये स्लिमर खरीदने के लिए फंड
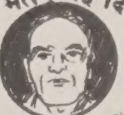
९½
4
4
दीवानी जनता पार्टी कूपन
जन्तर मंतर नई दिल्ली
केवल
चार पैसे
जनता पार्टी
कूपन नं० ९½
नाम दाता
पता
श्री मधु दंडवते के कपड़ों की ड्राइक्लीनिंग के लिए फंड
(नोट—जब दंडवते साहब को मंत्री पद की शपथ लेने के लिए बुलाया गया तो वे उस समय बाथरूम में अपने कपड़े धो रहे थे)

वह हक्की-बक्की सी खड़ी थी। उसकी घड़ी में अभी आठ पेंतीस ही हुए थे और आठ पचास की गाड़ी कब की जा चुकी थी। स्टेशन मास्टर के कमरे में लगी क्लाक की बड़ी सुईं छोटी को नौ पर छोड़ बारह को पार करती हुई तीन पर जा खड़ी हुई थी, जैसे वह छोटी के पास आकर दूर हट जाने में ही अपना गौरव समझती है। सारे स्टेशन पर वह वीरानी छाई हुई थी, जो लड़की की विदाई के बाद विवाह वाले घर में छा जाती है। उसने फिर अपनी घड़ी की ओर देखा। यह इतनी लेट कैसे हो गई ?

'धर्मपुर के लिये दूसरी गाड़ी ?'

'बारह दस की पैसेन्जर।' अधेड़ स्टेशन मास्टर ने अपने रजिस्टर को आलमारी में रखते हुए कहा।

वह दूसरी गाड़ी का समय जानती थी। बारह दस की पैसेन्जर धर्मपुर पहुंचती है, सुबह पांच पचपन पर। फिर भी उसने पूछ लिया—ऐसे ही।

उसने अपनी घड़ी मिला ली। नौ बज कर बीस मिनट हुए थे। जैतीपुरा का छोटा-सा स्टेशन जंगली पोखर की तरह निस्पन्द हो गया था। थोड़ी देर पहले आकर चली गई गाड़ी उसके जीवन में खलबली की तरंगें पैदा कर शान्त हो गई थीं।

गाड़ी आने में लगभग तीन घंटे बाकी थे। स्टेशन से तीन मील दूर गांव रात के अंधेरे में जैसे क्षितिज का एक कोना बन गया था।

स्टेशन मास्टर अपने कमरे में ताला बन्द कर स्टेशन के साथ ही बने अपने क्वार्टर में जाने की तैयारी कर रहा था कि उसने अंधेरे में खड़ी उसकी ओर देखा।

'आपको धर्मपुर जाना है ?'

'हां।'

'वेटिंग-रूम खोल देता हूं।' उसने रूम खोल दिया और एक मद्धिम-सा जलता हुआ लैम्प उसमें लाकर रख दिया।

वेटिंग रूम में एक बड़ी सी गोल मेज बीच में रखी हुई थी। आसपास दो-तीन कुर्सियां और दो ओर दीवार से लगी दो बेंचें भी पड़ी थीं। बाहर अंधेरा गहरा होता जा रहा था। आकाश बिल्कुल काला नजर आ रहा था। और वहां से आती हुई कालिमा सभी पेड़ पौधों को ढकती जा रही थी। उसने दरवाजे से देखा, बाईं ओर कुछ दूर लैम्प पोस्ट के पास कुछ ग्रामीण यात्री बैठे बीड़ी का धुंआ उड़ा रहे थे। उनके साथ की स्त्रियां वहीं जमीन पर लेटकर सो गई थीं।

वह एक लम्बी आराम कुर्सी पर बैठ गई। उसकी पीठ दरवाजे की ओर थी। अटैची से उसने एक उपन्यास निकाला और उसके पन्ने उलटने लगी। फिर एक भय उसके अन्दर जल में पत्थर की तरह उतर गया, 'कहीं कोई पीछे से आकर ...?' उसे कंपकपी छूट गई। वह खड़ी हो गई। तेज सांसों में उसने आंखें फाड़ कर दरवाजे के बाहर देखा। पटरियों के पार काला लबादा ओढ़े हुए वृक्ष उसे तिलस्मी उपन्यासों के पात्रों से लगे। उसने झांक कर बायीं ओर देखा। लैम्प पोस्ट के पास से बीड़ी का धुंआ उठ रहा था।

सांसों का क्रम कुछ मद्धिम हुआ। वह मुस्कराई। दाएं कंधे पर झूलती हुई अपनी वेणी पर बड़े आश्वस्तभाव से उसने अपनी हथेलियां घुमाईं। घड़ी की ओर देखा, अभी पौने दस बजे थे। अलस भाव से उसकी दृष्टि फिर पटरियों के पार चली गई। वही काले लबादे में लिपटी हुई मानव आकृतियां। वक्ष प्रदेश में तरंगों का ज्वार बढ़ने-घटने लगा।

वह अन्दर आकर सामने की कुर्सी पर बैठ गई। अब उसका मुंह दरवाजे की ओर था। वह अपना उपन्यास पढ़ने लगी। परन्तु उसे लग रहा था दरवाजे के बाहर कुछ आकृतियां चल फिर रही हैं। उसने नजर उठाई। सामने कुछ नहीं था। पटरियों के परे की आकृतियां? पर वे तो वृक्ष थे, निर्जीव वृक्ष। उसने फिर खुले पृष्ठ की ओर दृष्टि फेरी। उसे फिर सामने कुछ चलता हुआ नजर आया।

वह उठ कर कमरे में घूमने लगी।

'यदि ऐसे में कोई आ जाए...?' उस विराने में उसके हृदय की धड़कन हथौड़े की तरह उसके कानों में बजने लगी। वह दरवाजे के पास आ खड़ी हुई। दायीं ओर से कोई आ रहा था। वह दरवाजे की ओट में हो गई और उसे देखती रही। वह सीधा चला गया। शायद कोई रेलवे कर्मचारी था।

उसने अपनी घड़ी की ओर फिर देखा। पूरे दस भी नहीं बजे थे। वह उसे देखती रही। सेकिण्ड की छोटी सुई तो बहुत तेज दौड़ रही थी। परन्तु शेष दोनों सुइयां रुकीं-सी लग रही थीं। जैसे कोई स्टैण्ड पर खड़ी साइकिल की सीट पर बैठा पैडल चला रहा हो, जहां से पहिया तो घूमता है पर साइकिल स्थिर रहती है।'

वह आकर कुर्सी पर बैठ गई। अब दरवाजा उसके बायीं ओर पड़ रहा था क्योंकि वह न उस ओर अपना मुंह करना चाहती थी न पीठ। लैम्प निकट लाकर वह उपन्यास के दो-तीन पृष्ठ पढ़ गई। फिर उसे लगा जैसे दरवाजे से कोई अन्दर प्रवेश कर रहा है। उसने चौंक कर देखा। वहां कोई नहीं था। शायद कोई दरवाजे के बाहर से निकल गया था।

वह फिर पुस्तक पढ़ने लगी। मन-ही-मन उसने निश्चय किया अब वह इधर-उधर अपना ध्यान नहीं बटायेगी। बस पढ़ती रहेगी। पढ़ेगी नहीं तो समय कैसे कटेगा ?

ग्रौर समय भी तो कैसा विचित्र है। कभी तो हिरन की तरह चौकड़ियां भरता निकल जाता है ग्रौर कभी कीड़े की तरह सरकता भी नहीं। कभी व्यक्ति को ग्रपनी गोद में बिठा कर हवा में उड़ता है ग्रौर कभी उसी की गोद में बैठ कर न खुद चलता है न उसे चलने देता है।

ग्रौर वह पढ़ती रही। दो-एक बार उसे ग्राभास हुग्रा जैसे दरवाजे पर खड़ी कोई चीज उसका ध्यान ग्राकर्षित कर रही है। पर वह ग्रपनी नजर पंक्तियों पर बलात् टिकाये रही। वह जानती थी, उधर कुछ भी नहीं केवल भ्रम है। परन्तु पुस्तक सम्भाले हुए उसकी उंगलियां शिथिल होने लगीं। दृष्टि पंक्तियों से फिसलती-सी गई। मस्तिष्क का प्रकोष्ट भर गया ग्रौर पुस्तक की ये पंक्तियां उसका द्वार खटखटाकर बिना प्रवेश पाये ही लौट ग्राई थीं।

उसने धीरे से गर्दन मोड़ी ग्रौर कनखियों से द्वार की तरफ देखा। वह ग्रपने ग्राप से देखने की चोरी-सी कर रही थी।

बाहर की वीरानी ग्रौर गहरी ग्रौर खामोश हो गई थी। उसने एक लम्बी सांस ली। दो ग्रौर लम्बी सांसें लीं। फिर वह लम्बी सांसें लेती गई।

घड़ी में रात के दस बज कर बाईस मिनट हो गये थे। ग्रभी दो घंटे ग्रौर थे। वह उठ कर दरवाजे पर ग्रा गयी। बायीं ग्रोर लैम्प पोस्ट के पास बैठे हुए मुसाफिरों की संख्या उसे बड़ी-सी लगी। बीड़ी का धुंग्रां पहले से ज्यादा उठ रहा था।

उसे खीझ-सी ग्राई। उसकी गाड़ी क्यों छूट गई? उसकी घड़ी ही क्यों बन्द हो गई। पर ऐसी बड़ी बात भी क्या हो गई। बारह बीस वाली पैसेन्जर तो मिल ही जायेगी। उसका स्कूल तो बिल्कुल स्टेशन के पास है। सात बजे तक तो वह ग्राराम से नहा-धोकर पहुंच सकती है।

वह फिर बेंच पर ग्रा बैठी। उसने ग्रपना उपन्यास खोल लिया ग्रौर पढ़ने लगी। कनखियों से वह दरवाजे की ग्रोर भी देखती रही। बार-बार उसे उबासियां ग्रा रही थीं। स्टेशन भी कितना छोटा-सा है। नहीं तो उठ कर एक कप चाय ही पी ग्राती। उसने ग्रपने उपन्यास का पृष्ठ उलट दिया। उसका उपन्यास भी कछुग्रा चाल मार्का है। पृष्ठों के पृष्ठ पढ़ जाग्रो, कोई महत्वपूर्ण घटना ही नहीं घटित होती।

परन्तु उपन्यास का यह स्थल कुछ ग्रधिक रोचक ग्रा गया था। मानसिक ग्रंतर्द्वन्द्व में रहने वाला नायक ग्रब नायिका की बड़ी-बड़ी ग्रांखों में भरे हुए ग्रांसुग्रों से कुछ द्रवित-सा हो गया था। दोनों बंगले के पिछवाड़े के बाग में खड़े बातें कर रहे थे। नायिका के पिता के ग्रा जाने की किसी भी समय सम्भावना थी ग्रौर यदि वह ग्रा जाये तो...?

ग्रौर कोई ग्रा गया। उसने सिर उठा कर देखा सामने एक ग्रादमी खड़ा था। उसे लगा, उसके दिल पर कोई बड़ी ही बोझिल चीज झट से ग्रा गिरी है। वह हड़बड़ाकर खड़ी हो गई। उपन्यास उंगलियों से छूटकर नीचे गिर गया। मेज के किनारे रखा लैम्प डगमगा गया।

ग्रौर उसे लगा, उसकी पिंडलियों का खून किसी ने निचोड़ लिया है।

उस ग्रादमी के दोनों कंधों पर थैले लटक रहे थे। उसके बायें हाथ में एक छोटा-सा बिस्तरा था ग्रौर दाहिने में एक सूटकेस। उसका कद ठिगना था, शरीर कुछ स्थूल। सिर पर ग्रागे के बाल भरे हुए ग्रौर पीछे के कुछ लम्बे। पुराने फ्रेम ग्रौर मोटे शीशों के चश्मे के पीछे से चमकती हुई ग्रांखें। बड़ी-बड़ी बिखरी मूंछों से ढके हुए होंठ, जिन पर एक विचित्र की थिरकन हो रही थी।

'क्यों? डर गई...? हा...हा...हा...! ग्रपने सामान से लदा लदाया वह ग्रादमी हंस दिया। लैम्प के मद्धिम प्रकाश में उस ग्रादमी की हंसी उसे श्मशान की चमकने वाली ग्राग की तरह भयानक लगी। वह कांपती-सी उसे देखती रही।

'बैठ जाग्रो न...हा...हा...हा...?' वह फिर हंसा ग्रौर मुड़ कर दूसरी वाली बेंच के पास जाकर ग्रपना सामान रखने लगा। गीता ने धीरे से ग्रपनी पुस्तक उठाई ग्रौर कुर्सी पर इस प्रकार डरते-डरते बैठ गई जैसे सामने कोई दण्डाधिकारी खड़ा हो।

वह इधर-उधर देखती, फिर उसे देखने लगती। वह ग्रपना सामान इधर-उधर करता हुग्रा कुछ गुनगुना रहा था। फिर वह बेंच पर बैठ गया ग्रौर चमकती ग्रांखों से उसकी ग्रोर देखने लगा। उसने ग्रपनी नजरें पुस्तक पर गड़ा दीं।

'कहां जाग्रोगी तुम?...'

प्रश्न सुन कर वह कुछ कसमसाई। फिर बोली, 'धर्मपुर।'

'धर्मपुर? हां मैं भी वहीं उतरूंगा। सुना है शिवजी का बड़ा पुराना मन्दिर है वहां...?' उसने पूछा, 'ग्रौर हां...तुम धर्मपुर में क्या करती हो...?'

'स्कूल में पढ़ाती हूं।'

'ग्रच्छा...मास्टरनी हो...हा...हा...हा...।' वह हंस दिया। गीता के भय के साथ क्रोध भी सम्मिलित होने लगा।

'इस जैतीपुरा में तुम्हारा कौन है?'

'मेरी मां है।' कहकर मद्धिम प्रकाश में गीता ने उसकी ग्रोर देखा तो कांप उठी। एक ग्रजीब-सी मुस्कराहट उसके होंठों ग्रौर ग्रांखों से झर रही थी।

वह ग्रादमी उठा ग्रौर दरवाजे की ग्रोर चला। भय से गीता के ग्रंग सुन्न पड़ने लगे। 'कहीं वह दरवाजा न बन्द कर दे?' पर वह ग्रादमी दरवाजे से बाहर चला गया।

वह फिर पढ़ने लगी, परन्तु बार-बार उसका ध्यान उस ग्रादमी की ग्रोर जा रहा था। फिर जैसे वह उसके वापस ग्राने की प्रतीक्षा-सी करने लगी। बार-बार वह नजर उठा कर दरवाजे की ग्रोर देखती ग्रौर उसे लगता कि उस ग्रादमी को बाहर गये बहुत समय हो गया है। एक-एक क्षण उसे दूभर लगने लगा। थोड़ी देर में वह लौट ग्राया। उसने पुस्तक पर झुकी नजरों से ही उसके ग्रागमन को देखा। उसकी चाल में हाथियों जैसी मस्ती थी ग्रौर उसकी गुनगुनाहट का स्वर उसने घने जंगल में दूर से ग्राती हुई ग्रावाज की तरह भयावह लगा।

'सुनो...!'

उसने चौंक कर देखा। वह ग्रपनी बेंच पर बैठा मुस्कराता हुग्रा उसकी ग्रोर देख रहा था।

'मैं जरा लेट रहा हूं। ग्रगर सो जाऊं तो गाड़ी ग्राने पर जगा देना...जगा दोगी न?' कहते-कहते वह बेंच पर लेट गया ग्रौर उसके मुंह से हल्की हंसी का स्वर फूट निकला। फिर लेटा-लेटा ही बोला, 'तुम तो न सो जाग्रोगी? दोनों की ही गाड़ी छूट जायेगी...हा...हा...हा...।' ग्रौर उसने करवट बदल ली।

वह कुछ बोली नहीं। उस ग्रादमी से उसे भय तो लग ही रहा था ग्रब गुस्सा भी ग्राने लगा, जो इतनी उन्मुक्तता से उससे बातें किये जा रहा था।

उसने घड़ी देखी। गाड़ी ग्राने में लगभग एक घण्टा बाकी था। वह फिर उपन्यास

शेष पृष्ठ ३४ पर

अर्थ अनर्थ

ओम प्रकाश पवार—अमरावती

● सोना बहुत मंहगा है।

नींद की बात की जा रही है या सोने-चांदी की, यह तो बता दो।

जगजीत सिंह राणा—दिल्ली-३५

● एक मित्र दूसरे मित्र से बोला, "यदि इस समय आप मुझे बीस रुपये उधार देंगे तो मैं आपका जन्म भर ऋणी रहूंगा।"

साफ-साफ बताओ ना कि पैसे लौटाने का विचार ही नहीं है आपका।

रत्नेश सक्सेना—इटारसी

● मनीष ने आशीष से पूछा, "तुम्हारा बेडरूम किधर है?"

क्या 'बैडरूम' के बाद 'गुडरूम' भी बताना पड़ेगा?

कैलाश, किराना स्टोर—रुतवा

● अध्यापक बच्चों को धमकाते हुए बोला, "कल से जो भी लड़का यहां साईकिल खड़ी करेगा, उसकी हवा निकाल दी जायेगी।"

हवा लड़के की निकाली जायेगी या साईकिल की?

जवाहर लाल मौर्या-बम्बई

● "तेरा गाना सुन कर तो हर आदमी तुझ को दाद देने को तैयार हो जायेगा।" मित्र, मित्र की तारीफ करता हुआ बोला।

'दाद' बिमारी की बात कर रहे हो या⋯।

नरेन्द्र कुमार गोकलानी—ब्यावर (राज०)

● "दूधवाले का बिल ढूंढ़ कर मुझे बताओ", मालकिन ने नौकरानी से कहा।

क्या दूधवाले भी चूहे की तरह बिलों में रहने लगे हैं?

कु० कान्ता ठाकुर—इन्दौर

● सुरेश गणित की कक्षा में सभी छात्रों के कान काटता है।

चाकू से या छुरी से?

कु० ज्योति वाहूरकर—अकोला

● "पत्र लिखने से पहले जान लीजिये, "एक पत्रिका में से⋯।"

किसकी जान लेनी है यह तो बता दो?

अंजुलिका—भिलाई

● पत्नी—"घरवाला मसाला होता तो सब्जी के स्वाद में चार चाँद लग जाते।"

पति देव को पीसकर मसाला तैयार किया जाता है या घर पर कूटा⋯

राम किशोर शर्मा—मुरादाबाद

● उसने आज अपने पिता के दो हाथ खाये।

टाँगें तो साबुत छोड़ दी हैं ना, शुक्र है कहीं⋯

सुशील के. अग्रवाल द्वारा श्री एच. आर. अग्रवाल, के. आर. बी रोड—गोहाटी

● "मुझे दरअसल भूलने की बिमारी है", अध्यापक अपने मित्र से बोला।

'दरअसल' के अलावा बाकी सब कुछ तो याद रहता है ना?

एस. सुरेन्द्र प्रजापत—बीकानेर

● ग्राहक दुकानदार से अपने सामान की तरफ इशारा करते हुए बोला, भाई साहब पहले मुझे तो बंधवा दीजिये।

सुतली से या रस्सी से? किस चीज से बंधना चाहते हैं यह तो बताओ।

राजू—मुरादाबाद

● मां बेटे से, "बेटा खाना खा लो।" बेटा, "दीवाना पढ़ कर खा लूंगा।"

रोज रोटी खाते खाते क्या दिल भर गया है जो दीवाना खाने पर⋯⋯।

धर्मेन्द्र पसरीचा—करनाल

● एक छात्र अपने मित्र से, "हमारे चारों सैक्शनों में सारे चार सौ बीस लड़के हैं।"

लड़कों की गिनती बता रहे हो या गुण?

नरेश कुमार—कलकत्ता

● "यह किताब हमारे स्कूल में चलती है।" मुन्नी ने अपनी सहेली से कहा।

स्कूल से बाहर चलते हुए क्या किताब को शर्म आती है?

रविन्द्र—कुरुक्षेत्र

● "मुझे टांग दो", मुर्गे का मीट मांगते हुए सोनू बोला।

हैंगर पर टंगना चाहते हो या कोई और बात है?

अजय कुमार—ज्वालापुर

● बिट्टू, "रेडियो बन्द कर दो।"

अल्मारी में या सन्दूक में?

विष्णु भोगी—जबलपुर (मध्य प्रदेश)

● लड़का बढ़ई से, "मुझे एक काठ का उल्लु बना दो।"

लगता है यह इन्सानी जिन्दगी से तंग आ गया है।

नानग कुमार अग्रवाल—तिनसुकिया

● होटल के एक बोर्ड पर लिखा था। यहां आदमियों के खाने का अच्छा प्रबन्ध है।

आदमी खिलाये जाते हैं या भोजन। साफ-साफ बताओ।

अजीत—मधुबनी

● ग्राहक को जाँच करके बल्ब दो। दुकानदार ने नौकर से कहा।

जाँच किसकी करनी है बल्ब की या ग्राहक की?

चन्द्र प्रभा—अमृतसर

● "फौरन जाओ, स्याही लेकर आओ", अफसर ने चपरासी से कहा।

क्या स्याही भी फौरन (विदेश) जाकर लानी पड़ती है?

अर्थ-अनर्थ
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

अरे, कुछ पता है तुम दोनों को कि कुछ ही दिनों में नये वर्ष का बजट पेश होने वाला है ? तुम दोनों इस तरह बेफिक्र बैठे हो जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नये टैक्सों से मुकाबला करने के लिये क्या करोगे ?
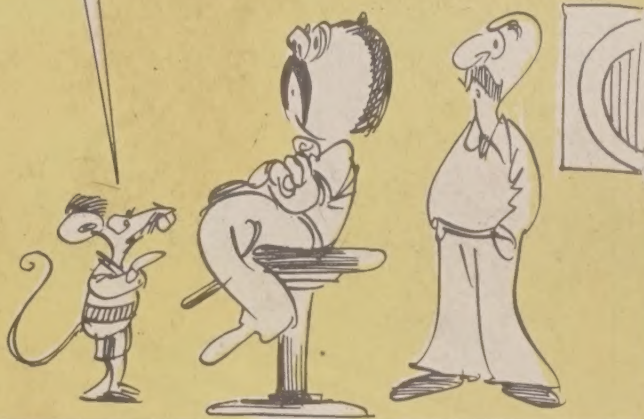
सरकार कितने ही टैक्स लगाये हम उनके चंगुल में फंसने वाले नहीं हैं।
हम बुद्धू नहीं हैं। हमने बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल चुटकी बजाते खोजा है।
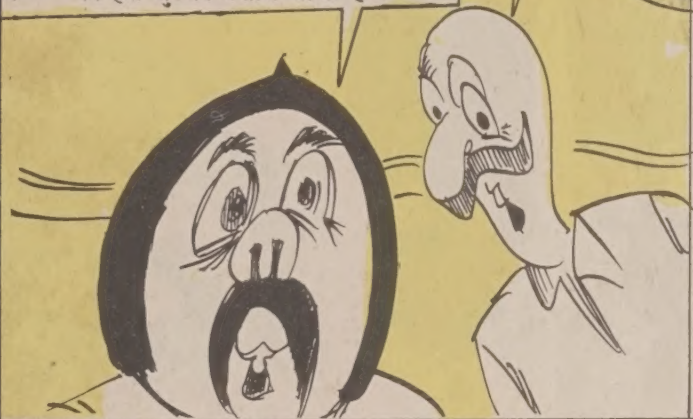
हम अपनी जासूसी विद्या का पूरा उपयोग नये टैक्सों से जूझने में लगा देंगे।
ए-वन फशकिलास जासूसों का मुकाबला करना हंसी ठट्ठा नहीं है।
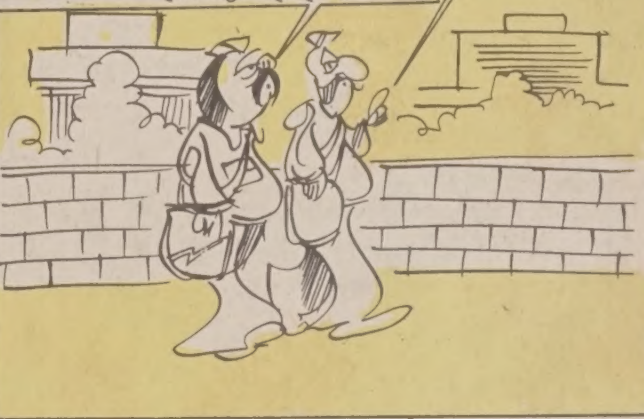
तुम अपने ही आदमी हो इसलिये हम बता देते हैं कि हमने क्या किया है। बिजली ठीक करने वालों का भेस धर कर हम वित्तमंत्री की कोठी में घुस गये। वहां हमने ड्रिराइंग रूम के टेबल के नीचे एक गुप्त स्पेशल क्वालिटी का बलैती ट्रांसमीटर फिट कर दिया है। अब हमें वहां जो कुछ बातें होंगी वह सारी अपने रिसीवर पर सुनाई देंगी। वह कभी न कभी बात करेंगे ही कि कौन-कौन-सी चीज पर टैक्स लगने वाला है। बस हम वह पहले ही खरीद कर रख लेंगे। तुम फिक्र मत करो हम तुमको भी बता देंगे।
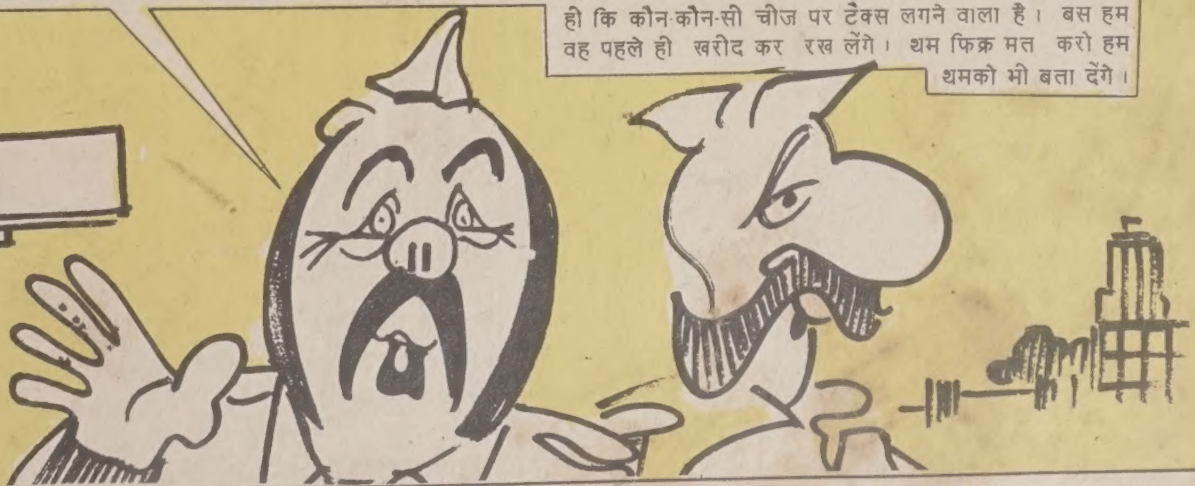
अब बहुत चौकन्ने रहना पड़ेगा। कोई शोर नहीं करेगा। रिसीवर पर आने वाली कोई बात नहीं छूटनी चाहिये।
शऽऽऽऽऽ आवाज आ रही है।
जासूसी में छोटी से छोटी बात से भी बड़े-बड़े भेदों का पता लग जाता है।

ईडली डोसा
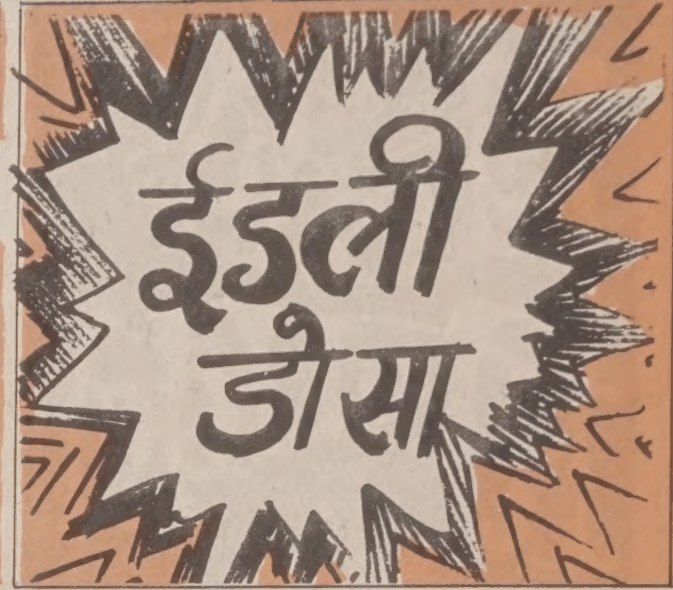
इडली डोसा! इस साल इडली और डोसे पर भारी टैक्स लगने वाला है, हमारी बात नोट करो। हम अभी जाकर इडली डोसे के पैकट के पैकट लाकर रख देते हैं। इन्सटैंट इडली डोसा।
मारकेट

कभी इडली खाने का जी करे तो थम म्हारे पास आ जाया करना, सरमाना नहीं हां। अपना ही घर सै।

खट खट खटर पटर, फट फट खर्र-खर्र खर्र खर्र इल्लै इल्लै लिपस्टिक।
लिपस्टिक ?

कहां जा रिया है ?
क्या कहां जा रिया है ? किसी जाते आदमी को टोकना नहीं चाहिये। बजट की बात है। मजाक नहीं है।

खर्र खर्र खर्र खर्र खर्र सांभर रसम खर्र खर्र बड़ा सापड़ खर्र।
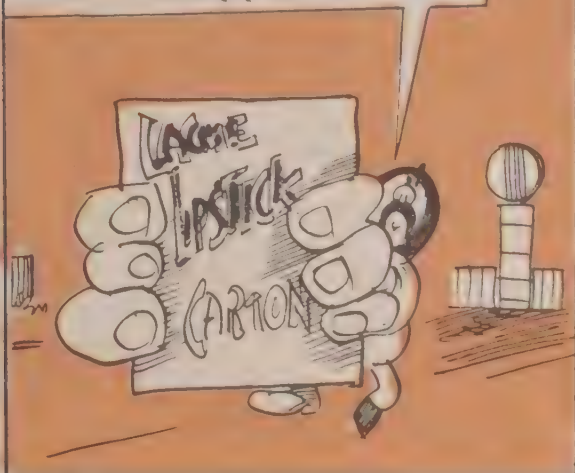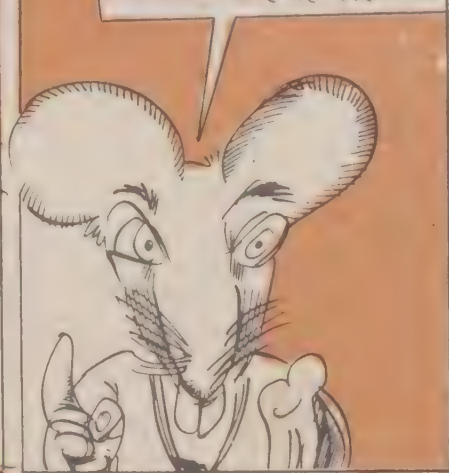
नोट कर लो लाल स्याही से ...इस साल सांभर, रसम, बड़ा ग्रौर सॉपड पर भी भारी टैक्स लगने वाला है।

हम ग्राज ही सारा कोटा ली ग्रायेंगे।

सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।
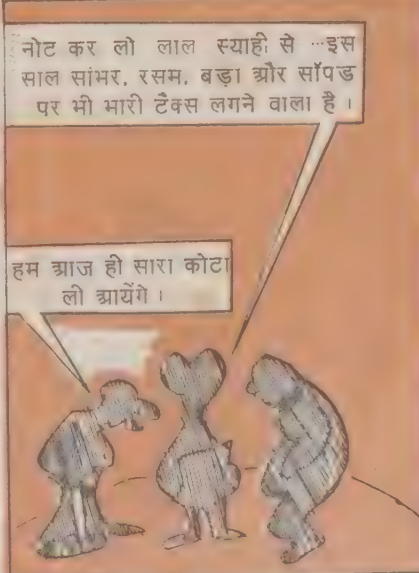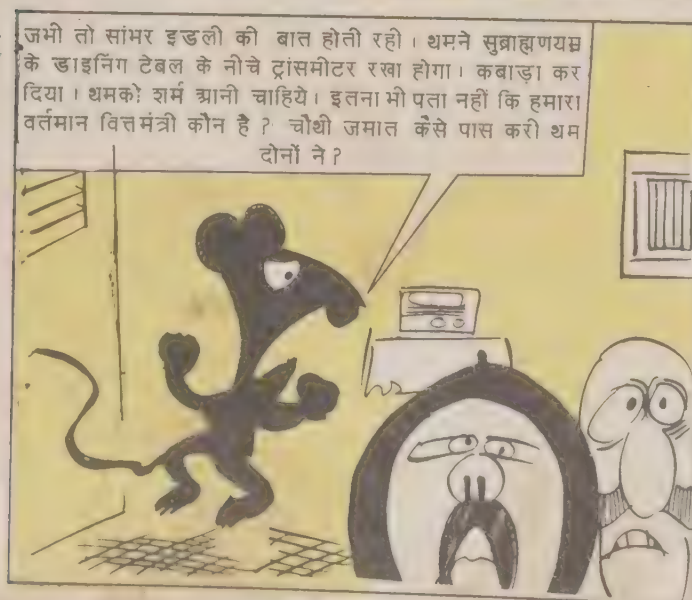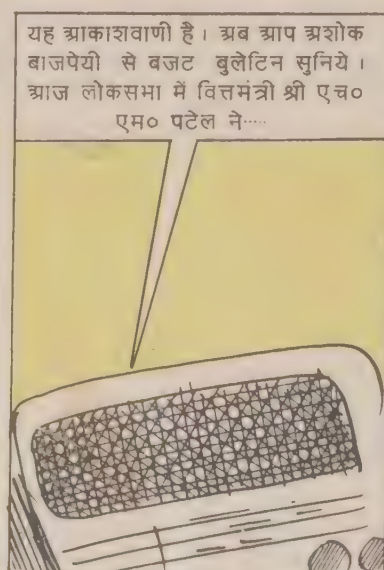
जब चले लिखने कहानी

प्रमोद कु. अग्रवाल

'खाली दिमाग शैतान का घर होता है', यह कहावत काफी प्रसिद्ध है। उन दिनों यह कहावत पूर्णतः मुझपर लागू हो गई जब मैं पढ़-लिखकर बेकारों की लाइन में लगा दिया गया। एक दिन जब मेरी नज़र एक पत्रिका के पन्ने पर पड़ी तो बौखला-सा गया। पत्रिका में चित्र के साथ एक कहानी छपी हुई थी और यह चित्र किसी और का नहीं बल्कि मेरे उस मित्र का था जिनके लिए सनकी जैसा विशेषण उपयुक्त न बैठता होगा। अनायास में ही बक गया, 'तो मतलब की आप लेखक हो गए हैं।' तुम्हारे खानदान में किसी ने कहानी लिखी है।

शाम को तैयार होकर, दोस्तों की गोष्ठी में शामिल होने चल पड़ा। उस सभा में जब चार-पांच लोगों ने उस कहानी की तारीफ के पुल बांधने शुरू कर दिए तो मेरे तन-बदन में आग सी लग गई। वापस घर लौटा तो विचार मग्न होकर चारपाई पर लेट गया, मेरा दिल बार-बार पुकारने लगा—'और कुछ नहीं तो बेटा, कहानी ही लिख डालो, शायद इसीलिए भगवान ने तुम्हें खाली बैठा रखा है। लगता है तुम्हीं कल के सबसे प्रसिद्ध कहानीकार साबित होने वाले हो। बस इसी तरह सोचते-सोचते, करवट बदलते हुए कमरे की छत पर आंखें टिकाते हुए न जाने कब निद्रा ने आ घेरा और रात भर ही में मैंने विश्व के सबसे बड़े कहानीकार का स्वप्न देख डाला।

विश्व के सर्वोत्तम कहानीकार सरीखे उच्चत्तम शिखर से टूटी हुई चारपाई पर उतारा मुझको सवेरे-सवेरे अम्मा की आवाज ने, 'उठो बेटा, यहां बाल्टी रख दी है, जल्दी से दूध ले आओ नहीं तो लाइन बहुत लम्बी लग जायेगी। हाय, अल्लाह! यह कैसा गजब ढा रही हो। खैर! किसी तरह दिल मसोस कर दूध लाया और शीघ्रता पूर्वक नित्य क्रिया कर्म से निपट कर पहुंच गया घर के सामने वाले पार्क में। बस, अब चक्कर में था कि कोई बढ़िया सा प्लाट मिले तो कहां से मिले। फिर भी, सोचते-सोचते जा बैठे किनारे पड़ी एक बेंच पर तो सर के बल उलट गया, बदकिस्मती से बेंच टूटी हुई थी किन्तु होश कहां थे जनाब को, व्यस्त जो थे प्लाट ढूंढने में।

फिलहाल होश ठिकाने आया तो जाकर चार आने का चना खरीदा। अबकी घास पर ही बैठ गया और एक-एक दाना मुंह में डालने लगा, समय जो बिताना था। अचानक कहीं से, दुम हिलाता हुआ, एक कुत्ते का पिल्ला सामने आ खड़ा हुआ। उसकी दयनीय आंखें कभी मुझको तो कभी मेरे चनों को घूर रही थीं। चना खाते-खाते मैं सोचने लगा, देखो, मनुष्य जाति भी कितनी स्वार्थी है। एक बेचारा पिल्ला जिसके अभी हंसने खेलने व खाने-पीने के दिन हैं, उसे कितनी बेरहमी से भूख में तड़पने के लिए छोड़ दिया गया है। तभी विचार आया, क्या प्लाट है। मनुष्य जाति की क्रूरता का कितना अच्छा वर्णन किया जा सकता है। अचानक उस पिल्ले का पंजा मेरी चने की पुड़िया पर पड़ा और मेरा खून उबल पड़ा, जब तक उसको एक लात न मारी, चैन न पड़ा। हांफता हुआ लौटा और दूसरी जगह जाकर बैठ गया, सारा मूड साफ कर दिया इस पिल्ले ने।

जब शांत हुआ तो फिर मेरी नजर पार्क के चारों ओर दौड़ने लगी। शायद कोई नया प्लाट मिल जाए। सोचा, आज जब तक कोई कहानी का प्लाट नहीं मिल जाता, घर वापस नहीं जाऊंगा। अनायास ही जब मैंने आंख उठाई तो नजर पड़ी पेड़ से गिरते हुए एक सूखे पत्ते पर। वह पत्ता हवा में झूलता हुआ मुझसे थोड़ी ही दूर पर आ गिरा। तभी उधर से एक बैल गुजरा और उसका खुर पत्ते को फाड़ता हुआ चला गया। च-च-च, कितना दयनीय दृश्य था यह। इसमें इस बेचारे पत्ते का क्या दोष है, यह वही पत्ता है जो कि कल इस पेड़ की शोभा बढ़ा रहा था और आज उसे इसी पेड़ ने उठाकर फेंक दिया, फिर और तो और, जमाने ने आखिरी सांस भी न लेने दी। आह! क्या प्लाट है। इतना अच्छा, दयनीय स्थिति का वर्णन तो किसी और प्लाट को लेकर नहीं किया जा सकता।

अचानक 'बचाओ-बचाओ' की आवाज सुनकर मैं घबरा गया, जल्दी से उठकर अपने पांव चप्पलों में डालने की कोशिश की तो देखा एक चप्पल ही गायब है। नजर शोर की तरफ दौड़ाई तो भौंचक्का रह गया। मेरी चप्पल बैल के पांव में फंसी हुई थी और बैल महोदय बौरा कर एक व्यक्ति को दौड़ा रहे थे। किसी तरह ऊपर वाले की दया से चप्पल उसके पांव से निकल गई तो मैं चप्पल उठा कर सीधा घर की ओर भागा। भागते-भागते जब घर की ड्योढ़ी पर पांव रखा तो मुंह बाकर चारों खाने चित्त गिर पड़ा। पांव फिसल गया था।

जब आंखें खुलीं तो फिर उसी टूटी चारपाई पर पाया, सारा बदन दर्द के मारे दुख रहा था। सारा प्लाट का चक्कर ठीक हो गया। अभी भी मैं प्रार्थना कर रहा था कि हे ऊपर वाले! किसी भी मेरे जैसे अनाड़ी को कहानीकार बनने का शौक न लगाना। ●

अपने प्र० आज ही भेजिये

तसनीम अहमद खाँ "बदायूनी,"—मुरादाबाद : मैं आपको बारह वर्ष से ऐसा ही देख रहा हूँ। ज़रा अपनी सेहत का राज़ बताइये ?
उ० : अच्छा खाते हैं, अच्छा पीते हैं, अपना तो यह असूल रहा है जीवन भर। और फिर कोई गम नहीं करते मजनूँ की तरह :

अश्क पीने को मिले और मिला गम खाने को,
ये गिज़ा मिलती है लैला तेरे दीवाने को।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

मदन लाल छापोला—उदयपुर : चाचा जी, अगर आपको फिल्म का हीरो बना दिया जाए और आपकी हीरोइन टुनटुन हो तो कैसा रहे ?
उ० : फर्नीचर टूटने के डर से वह फिल्म आपको सिनेमा वाले दरियों पर बिठा कर दिखायेंगे।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

चन्दभान अनाड़ी—जबलपुर : अपने सबसे प्यारे भतीजे का नाम बताइये ?

उ० : कितने चालक हैं आप। हम आपका नाम ले देंगे यही सोचा है ना आपने। और बाकी लाखों दीवाने जो हमारे सर के बाल नोंच लेंगे क्या यह नहीं जानते हम।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

अरोड़ा बेकरी—काशीपुर : क्या कोई बता सकता है कि कल क्या होगा ?
उ० : सवेरे सूरज निकलेगा और शाम को छुप जाएगा इतना तो हम बता सकते हैं। पर यह सूरज किसे देखना नसीब होगा, यह कोई नहीं बता सकता। एक बार हम बीमार पड़े। डाक्टर हमारी जांच करके जाते हुए बोला, "कल मैं आपको फिर देखूंगा," इस पर हमने पूछा, "आप तो मुझे देखेंगे, पर इतना बताते जाइये कि मैं भी आपको देख सकूंगा या नहीं।"

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

अजय विनोद हरितवाल—तिनसुकिया : भारतीय फिल्म की परिभाषा बताइये ?
उ० : हर भारतीय भाषा का कचूमर निकालना और समाज सेवा और कला की आड़ में ऐसा कलाकंद पेश करना जिसके लिए लोग खुशी-खुशी लुटने को तैयार हो जाएं।

बद्री प्रसाद वर्मा अंजान—गोलाबाजार : इन्सान जब रोता है, तो आंसू बहते हैं, जब हंसता है तो क्या होता है ?
उ० : अगर आप हमें इन्सान समझते हैं तो अपनी हालत तो यह है :

रोये हैं जब तो रख दिया दरिया निकाल कर,
हंसते भी हैं तो आंख में आंसू सम्भाल कर।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

यु० के० शाही—बिरगंज, नेपाल : मैं नेपाल में दीवाना के दीवाने पाठकों की एक क्लब बनाना चाहता हूँ। उसके लिये कुछ सलाह दीजिये ?
उ० : आपकी तरह दीवाना के दूसरे पाठक भी अपने-अपने शहरों में दीवाना क्लब बनाएं और राजनीति से अलग रहकर समाज सेवा के लिए कुशल कार्य करें। और एक ब्रादरी की तरह आपसी समस्याओं को हल करने के लिए समय-समय पर दीवाना क्लब की सभाओं का आयोजन करें तो उनका हम स्वागत करेंगे, और क्लब की सभाओं की कार्रवाई दीवाना में प्रकाशित करने का आयोजन करेंगे।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

हरगुन जसवानी—मन्डला : चाचा जी, क्या कभी आपको सच्ची बात भी बुरी लगी है ?
उ० : जी हाँ, बरसों पहले जब हमारा विवाह हुआ और ससुराल वालों की ओर से बहुत बड़ी रकम हमें कन्यादान में मिली, तो उसकी सचाई बताते हुए हमारे एक मित्र ने हमारे कान में कहा, "यह रकम देखकर आश्चर्य में मत पड़ो। जितनी बड़ी मुसीबत तुम उठा रहे हो उसके सामने तो यह कुछ भी नहीं।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

शील कुमार शर्मा, शीतल शर्मा—किग्जवे कैम्प : आप इतने वर्षों से हमारे प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं, क्या आपका स्टाक समाप्त नहीं होता ?
उ० : आपके प्रश्न हमारे दिमाग़ में हल चला कर नया खाद और नये बीज डालते रहते हैं और नई-नई फ़सल उगती रहती है।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

विनोदपुरी 'रंजु,'—लुधियाना : मेहनत करने के बाद भी कुछ लोग उन्नति क्यों नहीं कर पाते ?
उ० : मेहनत कब कहां और कैसे की जाए इस बात का निर्णय करने में उनसे चूक हो जाती है। बताईये, कोई नदी की रेत में अनाज के दाने बोये तो क्या वहां खेती लहलहायेगी।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

राजकुमार पंजवानी—बिलासपुर : चाचा जी, जीने के लिए क्या याद रखना चाहिए ?
उ० : बस एक बात याद रखिये, कि सांस लेना न भूलिये।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

सुरेश पंडीवाल—श्री गंगा नगर : भगवान ने आपके मोटे दिमाग में कौन से खेत का भूसा भरा है ?
उ० : वह खेत श्री गंगा नगर में आपके मकान के पिछवाड़े ही है। पर आप हमारा दिमाग़ चाटने से पहले क्या यह जानना चाहते हैं कि भूसे में कौन-कौन से विटामिन हैं।

◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇◇

ए. एल. गुप्ता—भरतपुर : किसी से भी मेरी दोस्ती अधिक दिन नहीं टिकती, बताइये क्या करूं ?

उ० : सब्र से काम लो और इस शेर का जाप किया करो :

हम बावफ़ा थे इसलिये नजरों से गिर गये,
शायद तुम्हें तलाश किसी बेवफ़ा की थी।

आपस की बातें
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास

भीगी पलकें उठा मेरी जां गम न कर……

बन्द करो बकवास, मैं गम नहीं कर रही, तुम्हारे लिये प्याज काट रही हूँ। कल से तुम इन प्याजों को देखोगे या मुझे।

इक कदम तुम भी चलो इक कदम हम भी चलें।

बन्द करो बकवास, खुद-कुशी करने का इरादा तुम्हारा हो सकता है मेरा नहीं।
LOVERS LEAP

यह हसरत थी इस दुनिया में बस दो काम कर जाते… (डकार !)
DIRECTOR

बन्द करो बकवास, मुझे मालूम है तुम्हें सिर्फ खाने और सोने से ही मतलब है। पर तुम मेरी गैरहाजिरी में मेरी सीट पर बैठ कर मेरा ही खाना खाकर डकार मारो तो इसे मैं सह नहीं सकता।

आपके पत्र

दीवाना का अंक १७ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ को देखकर इतनी हंसी आई कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। मोटू पतलू का चुनाव हंगामा पसंद आया। इस अंक में मुहावरों के दीवाने रूप ने तो हमें भी दीवाना बना दिया। मैं भविष्य में ऐसी ही सामग्री की आशा करता हूं।

दीवाना का अंक १६ मिला। आजकल मुख पृष्ठ पर फिल्म स्टारों को चिल्ली के साथ देखकर काफी अच्छा लगता है। स्थाई स्तंभों ने हमेशा की भांति दिल को खुशी प्रदान की चित्र कहानी 'इंस्पेक्टर ईगल' की शुरूआत पसन्द आई। अब देखना यह है कि इसे आप आगे भी इसी तरह रोचक बनाये रखते हैं या नहीं ? शांति भटनागर लिखित 'बड़े घर की बेटी' कहानी ने यह सिद्ध कर दिया कि मध्यम वर्ग की लड़की, अमीर घराने की न्यूलाईट लड़कियों से कहीं बेहतर पत्नी साबित होने के गुण रखती है।

चन्द्रनारायण माथुर—बीकानेर

आपका दीवाना अंक नं० १७ पढ़ा। मुख पृष्ठ पर बांसुरी देखकर हंसी आ गई। इस अंक में मोटू-पतलू चुनाव हंगामा बहुत पसंद आया। प्रेम पत्र, अर्थ-अनर्थ, परोपकारी के अतिरिक्त हेमा मालिनी वाला लघु लेख प्रशंसनीय रहा। कहानी पृथ्वी और धुरी अच्छी रही। मेरी फोटो पत्र-मित्र में क्यों नहीं छपी ?

हरमीत सिंह—दिल्ली

मैं दीवाना काफी अर्से से पढ़ती हूं। दीवाना ही एक ऐसी पत्रिका है जिसमें हास्य सामग्री के साथ-साथ 'क्यों और कैसे' जैसे ज्ञान वर्धक स्तम्भ, रोचक चटपटी कहानियां मुझे बेहद पसन्द हैं। दीवाना पढ़ने के लिए हर सप्ताह नई-नई स्कीम बनानी पड़ती हैं। हर बार दीवाना सबसे पहले पढ़ते हैं। दीवाना के अंक सोलह में 'मोटू पतलू' चित्र कथा विशेष रोचक लगी। दीवाना पत्र-मित्र क्लब में भाग ले सकती हूं कृपया बतायें।

बेबी अफरोज 'खानम'—बीकानेर

जी हां क्यों नहीं ! मगर आपको एतराज न हो तो। —सं०

दीवाना का अंक १७ प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ को देखकर इतनी हंसी आई कि मैं वर्णन नहीं कर सकता। मोटू पतलू का चुनाव हंगामा बेहद पसंद आया। इस अंक में मुहावरों के दीवाने रूप ने हमें भी दीवाना बना दिया, मैं भविष्य में भी ऐसी ही सामग्री की आशा करता हूं।

सतीश एबट—लुधियाना

दीवाना का अंक १७ मिला। अब दीवाना दिन-ब-दिन तरक्की की ओर अग्रसर होता जा रहा है। दीवाना के मुख पृष्ठ पर हंसीलाल को देख हमारी हंसी का ठिकाना ही नहीं रहा। इंस्पेक्टर ईगल की कहानी बहुत अच्छी लग रही है।

लखमी चन्द सुविधा—इन्दौर

दीवाना का १७वां बड़े चाव से पढ़ा। इस अंक की सभी सामग्री सुरुचिपूर्ण थी। मुझे यह देख कर खुशी होती है कि दीवाना का स्थान 'हास्य व्यंग' पत्रिकाओं में निरन्तर शिखर की ओर अग्रसर होता जा रहा है। आपसे केवल एक अनुरोध है कि हम लोगों की प्यारी पत्रिका दीवाना में ज्ञान वर्ग पहेली स्तम्भ अविलम्ब शुरू कर दें। इसके लिये सभी पाठक आपके आभारी रहेंगे।

आसमी रज़ा—भागलपुर

दीवाना का १७ वां अंक बड़ा ही रोचक रहा, मुख पृष्ठ पर चिल्ली का आधुनिक कृष्ण का मुस्कुराता हुआ रूप बड़ा ही लुभावना रहा। हंसीलाल ने तो सचमुच आकर सारी उदासी को गुल कर दिया ! दीवाना के प्रत्येक अंक में परोपकारी जी परोपकार करके बाद में पछताते हैं, बड़ी दया आती है उनकी हालत पर सहानुभूति जताने पर अफसोस की हमें उनका पता मालूम नहीं। मोटू-पतलू के चुनाव हंगामे ने भी हंसी जगत में काफी हंगामा मचाया।

सुरेन्द्र प्रजापत 'अलबेला'—बीकानेर

दीवाना का अंक १६ प्राप्त हुआ 'रंग भरो प्रतियोगिता' न होने पर निराशा हुई। अंक १७ में भी रंग भरो प्रतियोगिता नहीं थी और न ही 'रंग भरो प्रतियोगिता' का परिणाम था। मुझे पूर्ण आशा है कि आप 'रंग भरो प्रतियोगिता' या ऐसी ही कोई रंगा-रंग प्रतियोगिता शुरू करेंगे जिसमें पाठक रंग भर के भेज सकेंगे।

आप फिल्म अभिनेता का परिचय आदि देते हैं। कभी-कभी किसी खिलाड़ी का परिचय भी कराया जाये। तो अच्छा रहेगा।

मुख पृष्ठ पर अभिनेता के फोटो न दिया करें बाकि दीवाना हंसाने में पूर्ण रूप से सफल है।

रोबिन बाबी—नई दिल्ली

आपके यहां से प्रकाशित 'दीवाना' का उसी समय से पाठक हूं जब आरम्भ से 'तेज साप्ताहिक' के नाम से बड़े आकार में प्रकाशित होती थी। और आज तक शायद कोई भी अंक ऐसा नहीं जिसे मैंने न पढ़ा हो। हर सप्ताह चिल्ली को मुख पृष्ठ पर नये रूप से प्रस्तुत करना सिर्फ दीवाने दिमाग की ही उपज हो सकती है। मनोरंजन की दृष्टि से दीवाना अपनी एक रुपया की लागत वसूल करा देती है। दीवाना में फिल्मी स्थान थोड़ा अधिक कर दिया जाये तो ज्यादा अच्छा है।

ए० एस० अमृत—अलीगढ़

एक लम्बे इन्तजार के बाद दीवाना अंक १७ मिला। इस अंक को पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। मुख पृष्ठ का चित्र काफी पसन्द आया। 'फिल्मी बैंगन का भर्था' काफी रोचक रहा। आप दीवाना के द्वारा हमारा समय समय पर नये स्तम्भों से मनोरंजन कराते हैं इसके लिये आप बधाई के पात्र हैं। दीवाना में कवितायें नियमित प्रकाशित किया करें।

बद्री प्रसाद वर्मा अंजान—गोलाबाजार

दीवाना का अंक १७ मिला। इस अंक में मोटू-पतलू बहुत अच्छा लगा। 'दीवाना पंचतंत्र' और 'अच्छी खबर बुरी खबर' भी आकर्षक थे। 'दीवाना' ने वाकई अब बहुत तरक्की कर ली है। मेरे लिये दीवाना पढ़ना उतना ही जरूरी है जितना सांस लेना। आपके 'क्यों और कैसे' स्तम्भ काफी ज्ञान वर्धक हैं।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा
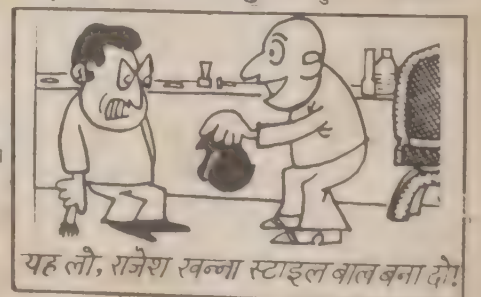
यह लो, राजेश खन्ना स्टाइल बाल बना दो!

मोटू-पतलू के साथी चेलाराम का नया जासूसी कारनामा
एक खून और पाँच गोलियाँ
पिछले कुछ दिनों से अपराध इतने बढ़ गये हैं कि अकेली पुलिस को इन पर काबू पाना कठिन होता जा रहा है। यही सोच कर मोटू-पतलू ने एक बार फिर अपनी प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी खोल ली है, जिसका चीफअप चीफ बॉस है चेलाराम और बॉस का सेक्रेट्री है चतुर सेन उल्लू, जो जासूसी उपन्यास पढ़-पढ़ कर पूरा गुप्तचर बन गया है।
यह रिपोर्ट पढ़ी है समाचार पत्र में! पिछले दिनों में दो आत्महत्यायें।
वह भी एक जैसे हालात में! आत्महत्या का कारण लिखते समय दोनों ने एक जैसे शब्द लिखे हैं।
दोनों ने हत्या रिवाल्वर से की है, दोनों के रिवाल्वर में एक-एक गोली थी जिसे चला कर उन्होंने आत्महत्या की! बाकी पांच-पांच गोलियां दोनों की मेजों पर लाइन में रखी मिलीं।
आत्महत्या करने वाले दोनों लुटे-पिटे लखपति थे।
दोनों को क्लबों में ताश खेलने की बीमारी थी।
जब उन्होंने आत्महत्या की तब वे ताश के खेल में अपना सब कुछ लुटा चुके थे। उनमें जिन्दा रहने की कोई इच्छा बाकी नहीं बची थी।
जासूसी के काम में मैं तुम्हें जेम्स बांड की तरह संयम से काम लेना सिखा दूंगा। मैंने अकरम इलाहबादी के जासूसी उपन्यास पढ़े हैं और मैं रहने वाला भी इलाहाबाद का हूं। बड़े-बड़े फिल्म प्रोड्यूसर मुझसे जासूसी फिल्मों के बारे में सलाह लेते हैं।
मैं मोटू-पतलू डिटेक्टिव एजेंसी से आया हूं।
मुझे अभी-अभी अपने हेडक्वार्टर से सूचना मिली है, सरकार ने आपकी एजेंसी को बाकायदा मान्यता दे दी है।
मैं एक खून और पांच गोलियों वाले केस पर छानबीन करना चाहता हूं। क्या आप इसके बारे में मुझे कोई विशेष जानकारी दे सकते हैं?
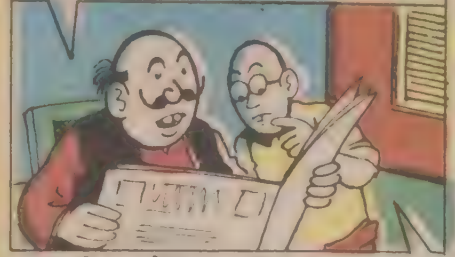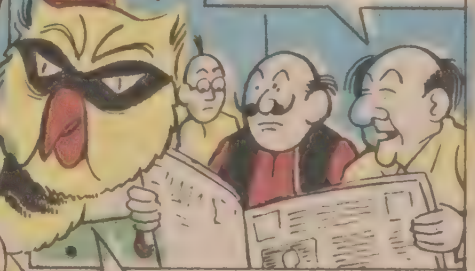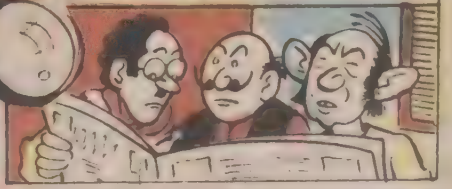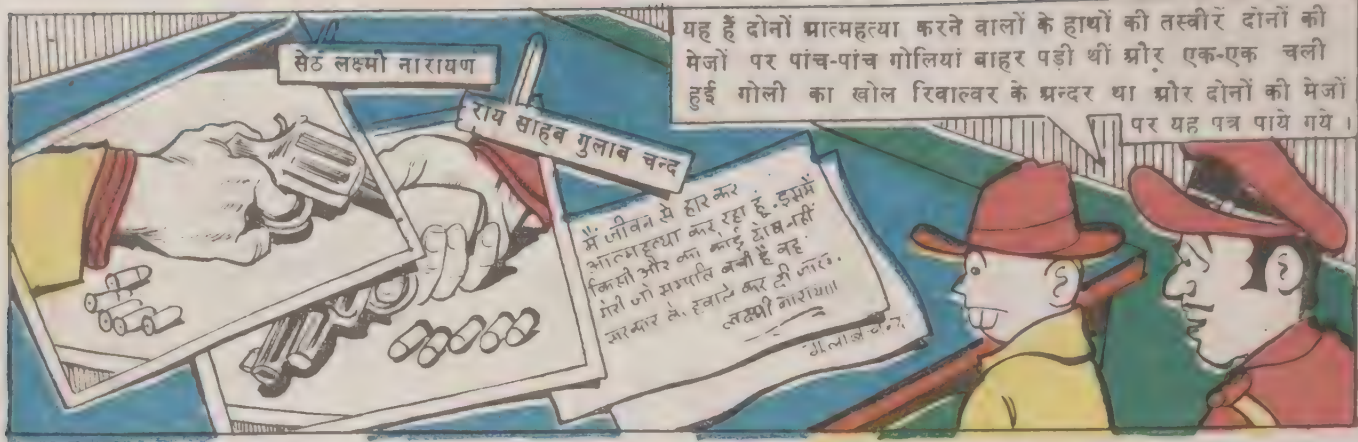
सम्पत्ति सरकार के हवाले की है । इसका मतलब है यह ग्रात्महत्या ही है. कोई ग्रौर हत्या करता तो उसमें रुपये पैसे का लालच होना चाहिये, या कोई ग्रौर कारण ।

कोई ग्रौर कारण दिखाई ही नहीं दे रहा है । दोनों के रिवाल्वर पर उनके ग्रपने हाथ के निशान पाये गये हैं इसके ग्रतिरिक्त ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता जिससे यह शक किया जा सके कि इस दुर्घटना के समय वहां कोई दूसरा मोजूद था ।

सेठ लक्ष्मी नारायण की मृत्यु ग्रीन स्टाल होटल में हुई है । जहां पूछ-ताछ करने पर मालूम हुग्रा है कि सेठ जी ने ग्रकेले ही वहां कमरा बुक कराया था । उनके साथ वहां किसी को भी नहीं देखा गया ।

राय साहब गुलाब चन्द की मृत्यु रेस्ट हाऊस में हुई है । वहा के चोकीदार ने बताया, राय साहब रात को ग्रकेले ही रेस्ट हाउस में ठहरे थे । उनके पास कोई ग्रौर नहीं ग्राया ग्रौर सुबह उनके कमरे का दरवाजा खोला गया तो वह ग्रपने कमरे में मृत पाये गये ।

कारण यही है कि दोनों को क्लबों में ताश ग्रौर जुग्रा खेलने की बिमारी थी । इस लत में उन्होंने ग्रपना सब कुछ लुटा दिया ग्रौर एक दिन वह ग्राया जब उनके पास ग्रात्महत्या के सिवाय ग्रौर कोई चारा नहीं था ।

फाइलों की भली-भांति जांच करने के बाद चेला राम सेठ लक्ष्मी नारायण के घर की ग्रोर चल दिया ।

सेठ लक्ष्मी नारायण के घर पहुच कर पहली मुलाकात उनकी सेक्रेट्री मिस माला से हुई ।

क्लब से बाहर निकलते समय उसे एक ग्रावाज़ ने चोंका दिया ।
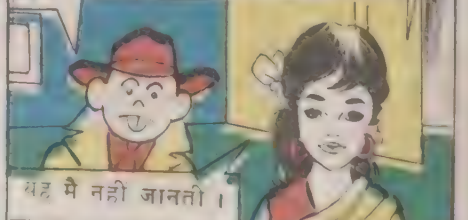
मून लाइट क्लब जाने से पहले मुझे राय साहब गुलाब चन्द के यहाँ जाना चाहिये ।
मुझे तो लगता है इस केस की गुत्थी न सुलझी तो तुम्हें आत्महत्या करनी पड़ेगी ।
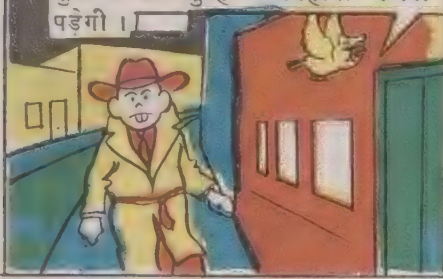
राय साहब गुलाब चन्द की कोठी पर पहुंच कर ।
क्या उनकी दुश्मनी थी किसी से ?
रात-रात भर क्लबों में ताश खेलते रहते थे । सारा घर नीलाम हो गया इस चक्कर में ।
आम तौर पर वह किस क्लब में जाया करते थे ?
दुश्मन तो वह खुद अपने थे । उनका जैसे अन्त हुआ यह कोई अनहोनी बात नहीं ।
मून लाइट क्लब ।
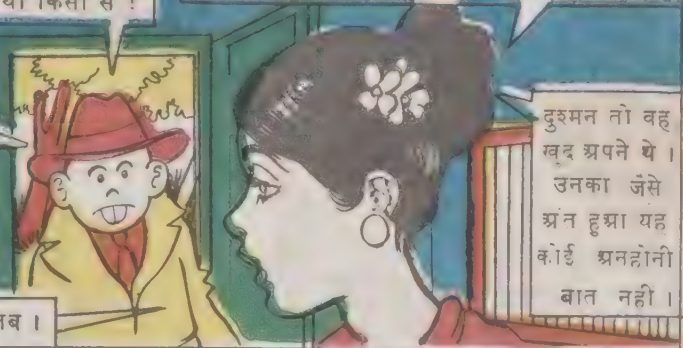
चेला राम ने पुलिस हैड क्वार्टर आ कर अपनी योजना इंस्पैक्टर को बताई । उससे पचास हजार रुपया एक जाली और इंस्पैक्टर की कार ली और मून लाइट क्लब की ओर चल दिया ।
इसके बाद मैं अकेला क्लब के अन्दर जाऊंगा ।
MOON LIGHT CLUB
इतनी देर में मैं 'जेम्ज हैडले चेज' का कोई जासूसी उपन्यास पढ़ कर नये गुर सीख लूंगा ।
कोई उल्लू तुम्हें तंग करे तो सहायता के लिये मुझे बुला लेना ।
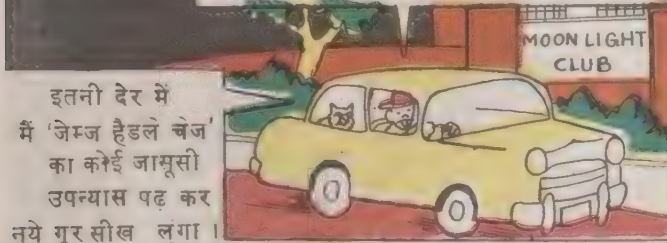
क्लब के सैक्रेट्री ने कुमार साहब का परिचय बड़े-बड़े सेठों और रईसों से कराया । और थोड़ी ही देर बाद 'कुमार साहब' लम्बी-चौड़ी हार-जीत के लिये उनके साथ ताश खेलने में व्यस्त हो गये ।
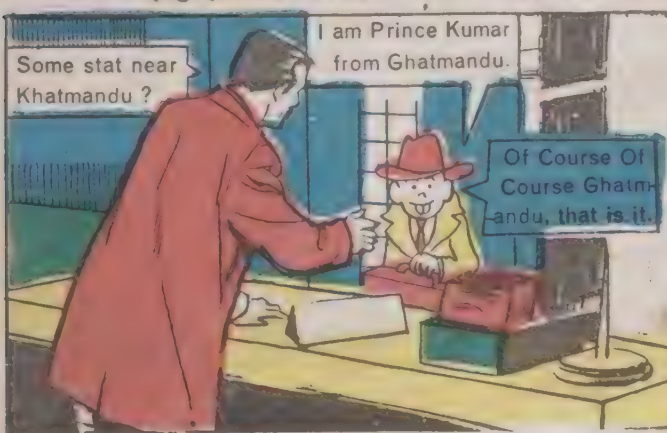
Some stat near Khatmandu ?
I am Prince Kumar from Ghatmandu.
Of Course Of Course Ghatmandu, that is it.
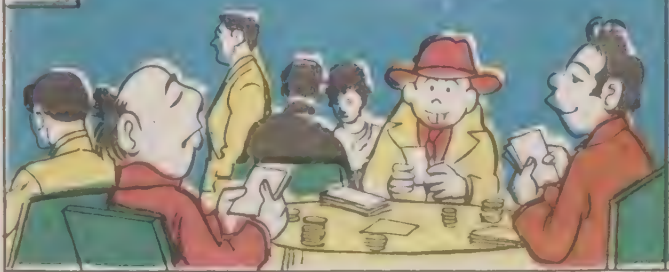
कुमार साहब लगातार हारे जा रहे थे । हर खिलाड़ी उन्हें अनाड़ी समझ कर नोंच-नोंच कर खा जाना चाहता था ।
लगता है कोई करोड़पति राजकुमार फंसा है !

कुमार साहब एक भी बाजी नहीं जीत पा रहे थे । कुमार साहब समझ गये कि यहाँ जो भी नया मुर्गा आता है उसके पर इसी तरह नोचे जाते हैं । कुमार साहब उन दो आँखों से भी बेखबर नहीं थे, जो उन्हें बुरी तरह घूरे जा रही थीं । अचानक क्लब का टाइम समाप्त हो गया और सैक्रेट्री ने बताया अब और खेल नहीं होगा ।

और खेल नहीं होगा ? पर मैं तो बुरी तरह हार चुका हूं, मैं इसे कैसे पूरा करूंगा ।
यह सब हम नहीं जानते । क्लब का टाइम समाप्त होने के बाद यहां खेल नहीं होता ।
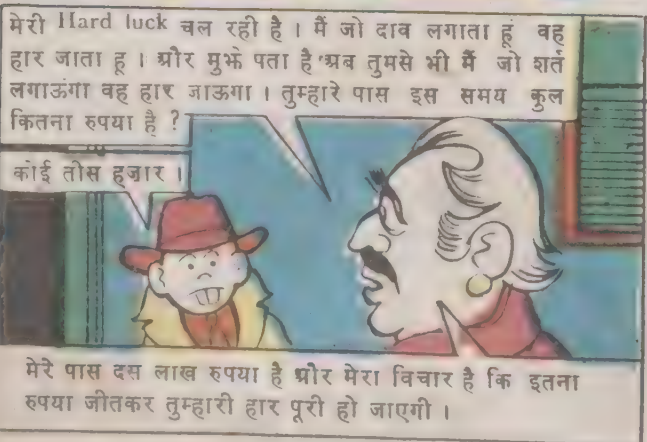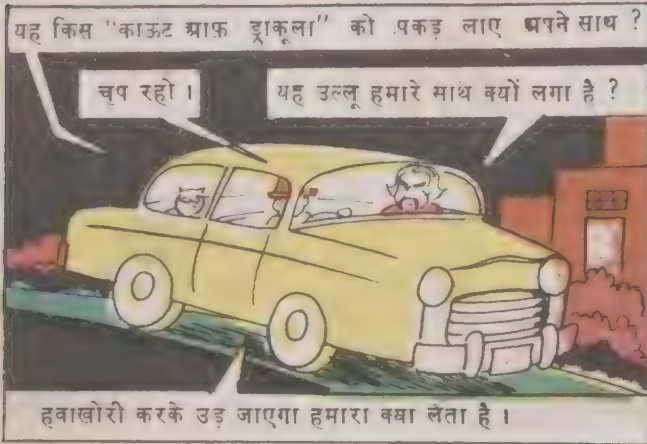
तुम अपने जीवन में हार-हार कर निराश हो चुके हो। मैं अपने जीवन से निराश हो चुका हूं। और मैं समझता हूं इस नई हार के बाद हमारे सामने आत्महत्या के इलावा और कोई चारा नहीं रह जाएगा। न मेरे लिये, न तुम्हारे लिये।

तुम ठीक कह रहे हो।
इसका मतलब है ताश की बाज़ियां लगाकर रात काली करने से क्या लाभ। क्यों न हम आत्महत्या की ही बाज़ी लगा लें।
That is good idia.
तुम्हारे पास रिवाल्वर है ?
नहीं, मेरे पास रिवाल्वर का क्या काम।
मेरे पास है—
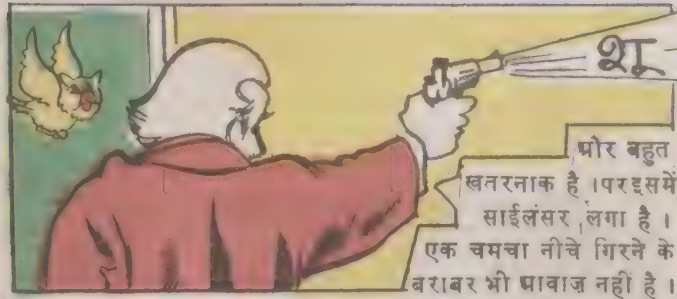
शू
और बहुत खतरनाक है।परइसमें साईलंसर लगा है। एक चमचा नीचे गिरने के बराबर भी आवाज़ नहीं है।

मैंने एक कागज पर अपनी आत्महत्या का नोट लिख दिया है, ऐसे ही तुम भी लिख दो।
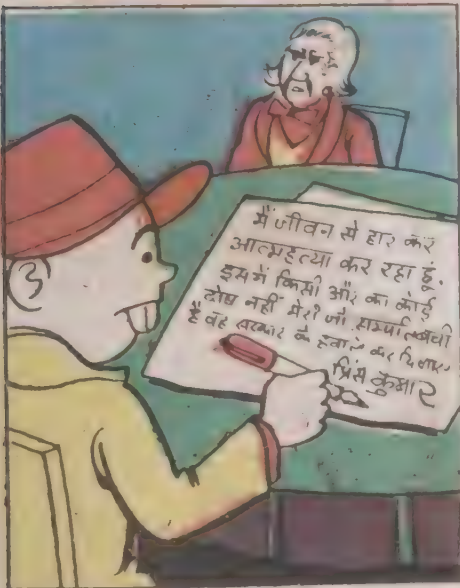
मैं जीवन से हार कर आत्महत्या कर रहा हूं। इसमें किसी और का कोई दोष नहीं मेरी जो सम्पत्ति बची है वह सरकार के हवाले कर दिया जाए।
प्रिंस कुमार

अब हम एक गोली रिवाल्वर में भरेंगे और पांच गोलियां बाहर रखेंगे।
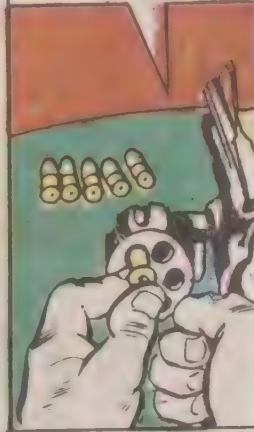
और रिवाल्वर की चर्खी तेज़ी से घुमा देंगे।
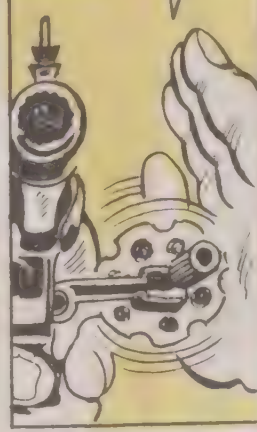
और फिर घूमती चर्खी को ऐसे बन्द करेंगे, जिससे पता न चले कि गोली वाला खाना कहां है।
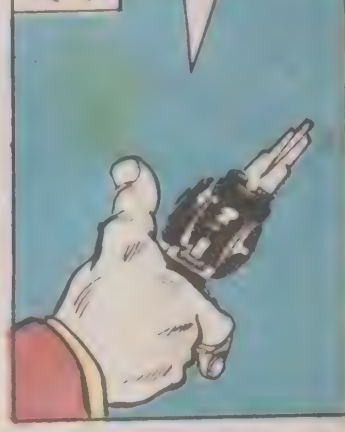
अब हम में से किसी को पता नहीं है रिवाल्वर का गोली वाला खाना ट्रीगर के सामने है या कहीं और है। अब हम में से एक आदमी इस रिवाल्वर को अपने सर पर रख कर चलाएगा।

यदि गोली वाला खाना ट्रीगर के सामने न हुआ और गोली न चली तो अब रिवाल्वर में दूसरी गोली भर कर उसे दूसरा आदमी अपने सर पर चलाएगा। यदि वह भी बच गया तो तीसरी गोली भर कर चर्खी घुमाई जाएगी। और उसे फिर पहला आदमी अपने सर पर चलाएगा। इस प्रकार खाली खाने कम होते जाएंगे। गोली चलने की सम्भावना बढ़ती जाएगी।
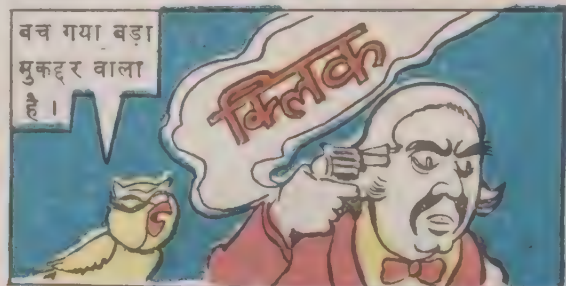
डरो नहीं। एक सैकिंड में कहानी इधर या उधर। मुझे तो तुम्हारा तीस हजार रुपया ही मिलेगा। मैं मर गया तो तुम्हें पूरा दस लाख रुपया मिलेगा।

क्लिक

अब भी कोई गोली ट्रीगर के सामने नहीं आई।
क्लिक।
अपनी-अपनी किसमत की बात है,

मैंने पांचवी गोली भर दी है। बस एक चेम्बर खाली बचा है। अब गोली चूक जाने की सम्भावना बहुत कम है।

क्लिक।

अब भी खाली चैम्बर ट्रीगर के सामने था।
मैंने छटी गोली भर दी है। अब कोई चैम्बर खाली नहीं है। और बारी तुम्हारी है।

लो रिवाल्वर को अपने सर पर रखकर ट्रिगर दबा दो। छः की छः गोलियां भरी हैं। अब निशाना चूक नहीं सकता।

मैं इतना बेवकूफ़ नहीं हूं कुमार साहब कि पूरा लोडिड रिवाल्वर अपने सर पर चला दूं। और गोली न चले तो मेरा भेद खुल जाए। अब तक मेरा शिकार पहली गोली में ही समाप्त होता रहा है। तुम पता नहीं कैसे बच गये हो। चलो पहली न सही आखरी गोली तुम्हारे काम आ जाएगी।

ट्रिगर दबा पर गोली नहीं चली।
क्लिक

और इसके साथ ही कुमार साहब का एक तेज़ घूसा उस हेराफेरिये के मुंह पर आ पड़ा।

आगामी अंक में अपने इन प्रिय जोकरों के इलेक्शन हंगामे देखना न भूलिये।

प्र० : जाड़े की ऋतु में हम अधिक भोजन क्यों पचा लेते हैं ?

शिवदत्त—मिर्जापुर

उ० : जाड़े के दिनों में वायु मण्डल में अधिक घनत्व होने के कारण, हम अधिक मात्रा में आक्सीजन ग्रहण करते हैं। आक्सीजन श्वांस प्रश्वांस की क्रिया को बढ़ा देता है। उसके फलस्वरूप पाचन क्रिया भी तीव्र हो जाती है और हम अधिक मात्रा में भोजन खाकर पचा लेते हैं ?

प्र० : जल का शरीर में क्या महत्वपूर्ण कार्य है ? **राजेश—रोहतक**

उ० : शरीर के अन्दर यदि गन्दगी रुकी रह जाए तो नाना प्रकार के रोग हो जाने की संभावना रहती है। जल को हम पीते हैं, वह शरीर के मल को अपने में घुलाकर स्वेद तथा मल-मूत्र के रूप में शरीर के बाहर निकाल देता है।

प्र० : पानी उबालने पर स्वादहीन क्यों अधिक हो जाता है ?

अब्दुल अजीज—मेरठ

उ० : पानी को उबालने पर (गर्म करने पर) उसमें से बुलबुले उठते हैं अर्थात पानी का तापक्रम अधिक होने पर उसमें मिली हुई वायु और कार्बन डाइआक्साइड बुलबुलों के रूप में निकल जाती है। यही कारण है कि उबले हुए पानी का स्वाद फीका पड़ जाता है। उबला हुआ पानी यदि मिट्टी के घड़े में कुछ देर रखा जाए या एक बर्तन से दूसरे बर्तन में डालकर ठंडा किया जाए तो वायु उसमें पुनः मिल जाती है और उसका स्वाद पुनः ठीक हो जाता है।

प्र० : घड़ों में जल ढककर रखने में वैज्ञानिक महत्व क्या है ?

उ० : पानी के बर्तन यदि खुले रखे जायें, तो उनमें धूल आदि गिर जाने की आशंका रहती है; दूसरे, जीव-जन्तु भी उसे पीकर जूठा कर देते हैं।

वैज्ञानिकों के मतानुसार, जल में मलिन व अपवित्र वायु का शोषण करने की एक विशेष प्रकार की शक्ति है। स्वच्छ वायु की अपेक्षा कार्बोनिक एसिड गैस अथवा अन्य गन्दी वायु भारी होती है और खुले हुए पानी के बर्तन में प्रवेश कर जाती है। अन्य प्रकार की गैसें भी पानी में प्रवेश करती रहती हैं। अतः बिना ढका हुआ पानी पीना दोष समझा जाता है।

प्र० : गर्मी में जल अधिक पीने से क्या लाभ है ? **कुंज बिहारी—मथुरा**

उ० : अधिक जल का व्यवहार करने से बाहर की गर्मी का हमारे शरीर पर कम प्रभाव पड़ता है। जल ही के कारण शरीर का तापक्रम ९८ फार्नहाइट रहता है। शरीर में जल का अभाव हो जाने पर हमें लू लग जाती है और शरीर का तापक्रम बढ़कर हमें अस्वस्थ बना देता है।

प्र० : उल्टी क्यों और कैसे होती है ?

रामदास—बहराइच

उ० : जो कुछ भोजन हम करते हैं, वह हमारे खड़े, बैठे तथा लेटे रहने पर भी भोजन-प्रणाली द्वारा नीचे खिसकता रहता है। भोजन प्रणाली की दीवार मांसपेशियों से बनी है। मांसपेशियों में सूत्रों की दो तहें होती हैं। अन्दर की तह में सूत्र आड़े तथा बाहर की तह में लम्बान रूप में होते हैं। आड़े सूत्रों के सिकुड़ने से भोजन प्रणाली का छिद्र छोटा हो जाता है, और बाहर के सूत्रों के सिकुड़ने से लम्बाई कम हो जाती है। इस प्रकार संकोचन और प्रसार से भोजन-प्रणाली में एक प्रकार की गति-लहर उत्पन्न होती है और इसी गति लहर द्वारा भोजन-प्रणाली में खाद्य-पदार्थ आगे बढ़ते रहते हैं। जिस प्रकार केंचुआ पृथ्वी पर अपना शरीर सिकोड़कर तथा फैलाकर आगे बढ़ता है, उसी प्रकार भोजन-प्रणाली का भी नियम है।

जब कोई ऐसा पदार्थ आमाशय में पहुंच जाता है, जिससे जी मिचलाने लगता है, तो यह गति लहर आमाशय से मुंह की ओर होने लगती है और उसके फलस्वरूप आमाशय का पदार्थ मुंह द्वारा उल्टी के रूप में निकल पड़ता है।

प्र० : मनुष्य बिना खाये कई दिन तक जीवित रह सकता है परन्तु बिना वायु कुछ मिनट भी नहीं जी सकता—क्यों ?

रेणु गोयल—अजमेर

उ० : हमारे शरीर में अनेकों कोष हैं जिन्हें सदा भोजन मिलता रहना चाहिए। यदि कुछ दिनों तक भोजन न मिले तो मनुष्य जीवित रह सकता है, क्योंकि शरीर के कोष अपने में खाद्य-सामग्री शक्कर, वसा तथा प्रोटीन आदि के रूप में संचय कर लेते हैं और भोजन न मिलने पर एकत्रित खाद्य-सामग्री से अपना काम चलाते हैं, परन्तु बिना श्वांस (ऑक्सीजन) के कुछ क्षण भी काम नहीं चल सकता। फेफड़े के कोषों में ऑक्सीजन को एकत्रित करके रखने के लिए कोई स्थान नहीं होता। अतः बिना श्वांस लिये कोष अपना कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं।

प्र० : थर्मोपलास्क (थर्मस बोतल) क्या है ?

सुशील कुमार—कांगड़ा

उ० : यह एक प्रकार की बोतल है। यह इस प्रकार से बनाई जाती है कि न तो बाहर की गर्मी इसमें प्रवेश कर सकती है और न भीतर की गर्मी बाहर निकल सकती है। इसमें दुहरी दीवार की एक बोतल होती है। इन दोनों बोतलों के बीच वायुशून्य होता है। बोतल पर चांदी की कलई होती है। जिस प्रकार प्रकाश-किरणें चमकदार धरातल पर पड़ने से मुड़ जाती हैं उसी प्रकार ताप-रश्मियां भी वापस लौट जाती हैं। अतः भीतर का ताप बाहर नहीं निकल पाता और बाहर का ताप भीतर नहीं प्रवेश करता। कांच, चांदी की कलई और वायुशून्यता के कारण बाहर की गर्मी एवं ठंडक का प्रभाव नहीं पड़ता और बोतल में रखी हुई वस्तु ठंडी या गर्म, जैसी रखी जाती है, वैसी ही घण्टों बनी रहती है।

प्र० : गर्मी में पक्के मकान की अपेक्षा कच्चा मकान क्यों सुखदायी होता है ?

भूमरगल—चूरू

उ० : पत्थर तथा ईंट, मिट्टी तथा फूंस की अपेक्षा, उत्तम संचालक है। मिट्टी में ताप का संचालन कम होता है और फूंस की झोंपड़ी तो और भी अधिक अधम संचालक होती है। अतः गर्मी के दिनों में पक्के मकान तपने लगते हैं और झोंपड़ी तथा कच्चे मकान शीतल रहते हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली १०००२

छम्मक छल्लो का बजट

हाल में ही एक्ट्रेस छम्मक छल्लो ने अपने नये बनाये स्वीमिंग-पूल के किनारे पत्रकारों के सम्मुख अपना वार्षिक बजट पेश किया। उनकी मम्मी कमला ने फिल्टर सिगरेट का एक गहरा कश मारते हुये दावा किया कि इस वर्ष का बजट और वर्षों मे भिन्न है। पहले के बजटों में घाटा दिखाया जाता रहा है। इसमे घरेलू अर्थ-व्यवस्था पर बहुत अनावश्यक बोझ पड़ता था कई बार चोरी-चोरी कारें गिरवी रखनी पड़ती थीं पार्टियों में छम्मक छल्लो को नकली जेवर पहन कर जाना पड़ता था। प्रायः सामान उधार लाना पड़ता। जैसा कि सबको पता है उधार लेने में माल महंगा मिलता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर नया बजट बनाया गया है। बजट कुछ-कुछ अर्थों में गांधीवाद के मूल्यों पर आधारित है। खर्च कम से कम करने का यत्न किया गया है। खर्चे कम तो हो नहीं सकते क्योंकि यह मामला एक चोटी की हीरोइन का है। अपनी प्रेस्टीज बना कर रखनी पड़ती है। खर्चें कम करने का उपाय दूसरे प्रकार से किया गया है। बजट में शर्म को ताक पर रखने की व्यवस्था है। जहां तक हो सके अपना सारा खर्चा प्रोड्यूसर के सिर डालने का महान प्रयास किया जायेगा। नौकरों को किसी न किसी बहाने बगैर तनख्वाह दिये नौकरी से निकलवाने का यत्न किया जायेगा। इस संक्षिप्त भाषण के बाद उन्होंने बजट पेश किया जो हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

आय विवरण

	रु०	पैसे
फिल्म कांट्रेक्टों से अनुमानित वसूली	२८,००,०००	००
मम्मी के नखरे उठाने में आया प्रोड्यूसर का खर्च	२,००,०००	००
शूटिंग के दौरान बर्थ डे मनाने तथा अपने चमचों-चमचियों पर निर्माता से करवाया खर्च	३,८०,०००	००
शूटिंग के दौरान प्रोड्यूसर द्वारा पहनने के लिये दी साड़ी न लौटा कर (साड़ियों का अनुमानित मूल्य)	२१,०००	००
ज़ुकाम का स्विटज़र लैंड जाकर प्रोड्यूसर के खर्चे पर इलाज	१,७०,०००	००
घर में सोफों पर डायरेक्टरों तथा प्रोड्यूसरों की जेबों से गिरे पैसे	२००	००
ड्राइवर, हेयर स्टायलिस्टों तथा प्राइवेट मेक-		

मप आर्टिस्टों के प्रोडयूसरों से दिलाये पैसे	५०,०००	००
बर्थ डे पार्टी पर मिले गिफ्टों से कमाई	१,००,०००	००
पार्टियों में मेहमानों के छूटे रुमाल, सिगरेट व माचिसों से आय	४,०००	००
कांट्रेक्ट साइन करने के लिये दूसरों से मांगे पेन मार कर	२००	००
कुल अनुमानित आय	३७,०५,४००	००

रुपये सेंतीस लाख पांच हजार तथा चार सौ केवल

व्यय

	रुपये	पैसे
मम्मी के मेकअप का सामान खरीदने पर व्यय	२,००,०००	००
मेरे मेकअप का सामान खरीदने पर व्यय	५,००००	००
ड्राइवर, मेकअप मैन-हेयर स्टाईलिस्ट आदि स्टाफ का वेतन	३०,०००	००
टेलीफोन बिल	४०,०००	००
पेट्रोल का खर्च	१५०	००
(ज्यादातर पेट्रोल खर्च प्रोड्यूसर के मत्थे मढ़ देंगे)		
बॉबी (कॉकर स्पेनियल कुत्ता) के रख-रखाव पर खर्च)	१,५०,०००	००
अखबारों व पत्रिकाओं में छपी अफवाहों का खण्डन करने के लिये स्टेशनरी खर्च	२,००००	००
घरेलू व्यय-मकान खाना-पीना आदि	८०,०००	००
इन्कम टैक्स छापों के बाद मम्मी को पड़े दिल के दौरों के इलाज पर व्यय	५०,०००	००
टैक्स वालों के सवालों का जवाब देते समय आया पसीना पोंछने के लिये रुमालों पर खर्च	१०,०००	००
पार्टियां देने पर व्यय	१,००,०००	००
साइन करने आये प्रोड्यूसर तथा मुलाकाती डायरेक्टरों द्वारा सिगरेट से जलाये सोफा कवरों तथा कार्पेटों के रफ़ू कराने पर	६०,०००	००
प्रेमनाथ से मम्मी का झगड़ा होने पर मम्मी के गले का इलाज खर्च	५०,०००	००
मुफ्त खोरे रिश्तेदारों तथा चमचे चमचियों का खर्च	१,५०,०००	००
पत्र-पत्रिकाओं में अपनी तारीफ लिखवाने पर पत्रकारों को घूस देने पर	७०,०००	००
अल्प छुट-पुट व्यय	२०,०००	००
कुल व्यय	१०,८०,१५०	००
अनुमानित बचत	२६,२५,२५०	००
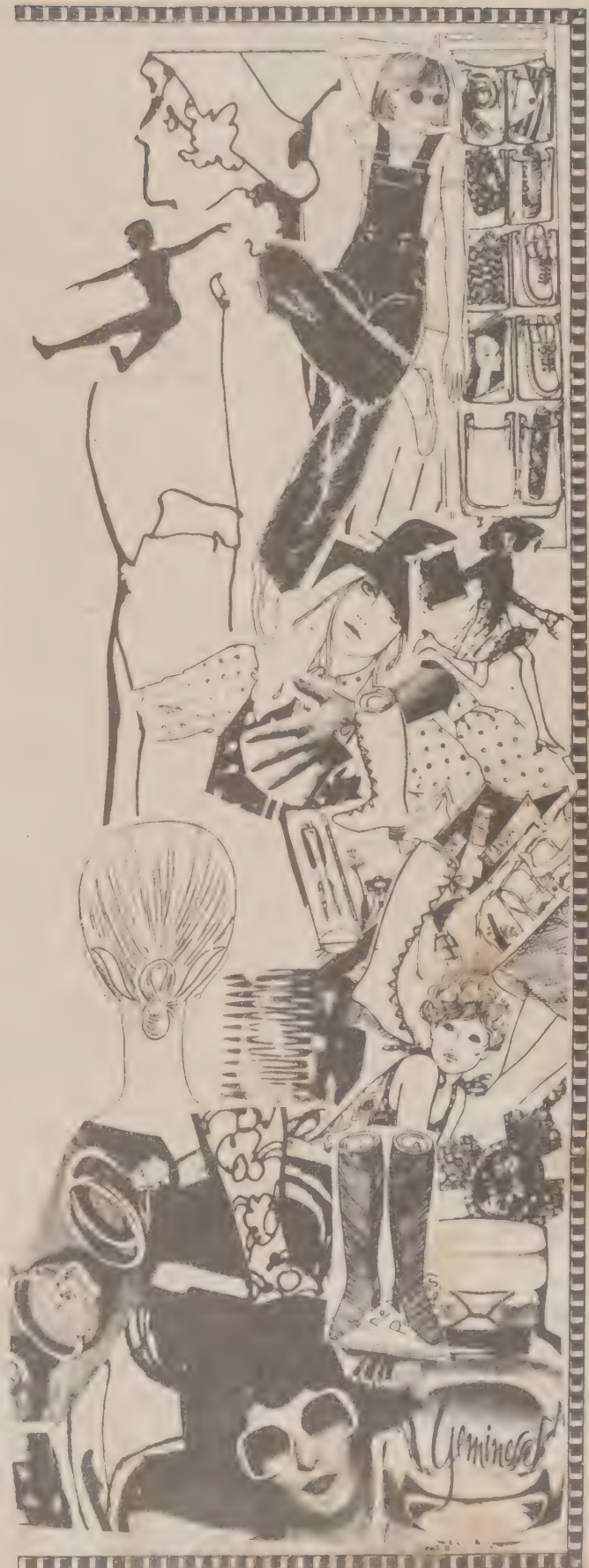
नरेन्द्र कुमार 'निन्दी'—कपूरथला

प्र० : क्या महेन्द्र अमरनाथ लाला अमरनाथ के बेटे हैं ?

उ० : जी हां।

प्र० प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी अजीत वाडेकर आजकल कहां हैं ?

उ० : वे स्टैट बैंक बम्बई में काम कर रहे हैं।

प्रदीप कुमार अग्रवाल—बिहार

प्र० : फुटबाल का आविष्कार कब और कैसे हुआ ?

उ० : फुटबाल बहुत पुराना खेल है। ईसा से पूर्व फुटबाल का आविष्कार होना बिल्कुल स्वाभाविक था। क्योंकि किक मारना मनुष्य की सहज स्वाभाविक क्रिया है।

अनिल कुमार अग्रवाल—हरदोई

प्र० : मबसे ज्यादा शतक किसने बनाये हैं और कितने ?

उ० : विश्व में सबसे ज्यादा शतक डॉन ब्रे ड मैन ने बनाये हैं। २९ शतक, टेस्ट मैचों में दूसरा नम्बर गैरी सोबर्स का है—२६ शतक।

जयदीप मौंगा—अमृतसर

प्र० : कृपा करके एम० सी० सी० का पूरा अर्थ लिखें ?

उ० : मेरीलबोन क्रिकेट क्लब।

प्र० भारत के विकेट कीपर फारुख इंजीनियर अब कहां है तथा वह टेस्ट मैचों में हिस्सा क्यों नहीं ले रहे ?

उ० : इंजीनियर इंग्लैंड में है। वे प्रथम श्रेणी के क्रिकेट से अब अवकाश ले चुके हैं, वे इंग्लैंड में ही रहते हैं। वहीं उनकी नौकरी, पत्नी भी है।

महेशकुमार फेरवानी—इन्दौर

प्र० : इस समय भारतीय क्रिकेट टीम में सर्वश्रेष्ठ आल रांउडर कौन है ?

उ० : कर्सन घावरी।

अशोक कुमार गुप्ता—कड़ाघाट

प्र० : यदुवेन्द्र सिंह आल राऊंडर होते हुए भी बाउलिंग क्यों नहीं करते ? क्या वे फील्डिंग में आल राऊंडर हैं ?

उ० : आल राऊंडर का अर्थ है जो खेल में प्रायः सभी रोल कर सकें। केवल फील्डिंग में अच्छा होना आलरांडर नही कहलाता। आल राऊंडर होने के लिये बाउलिंग, बैटिंग तथा फील्डिंग तीनों ही अच्छे होने चाहिये। यजुवेन्द्रसिंह बाउलिंग करते हैं परन्तु हाल के टैस्टों में उनसे बाउलिंग न के बराबर कराई गयी। यह कैप्टन की इच्छा है। यजुवेन्द्र ने रणजी टाफी आदि मैचों में बाउलिंग की है। हो सकता है कैप्टन ने उनकी गेंदबाजी टैस्टों में अजमाने लायक न समझी हो !

एस० मन्जूर हसन 'कादरी—बीकानेर

प्र० : टेबल टेनिस खेल क्या ओलम्पिक खेलों में शामिल है ?

उ० : नहीं।

रेहान-जलाली—लखनऊ

प्र० : पाकिस्तान क्रिकेट टीम का विश्व में क्या महत्व है ? या दूसरे शब्दों में पाकिस्तान टीम का नम्बर किस देश की टीम के बाद आता है ?

उ० : पाकिस्तानी क्रिकेट टीम आज विश्व के तीन चोटी के क्रिकेट खेलने वाले देशों में गिनी जाती है।

नरेश नारंग महेश, छाबड़ा—इन्दौर

प्र० : निम्न को प्रारम्भिक बल्लेबाज के रूप में जमाये सुनील गवास्कर, ग्लेन टर्नर, डेनिस एमिस, राय फ्रेडरिक्स एव सादिक मोहम्मद।

उ० : रॉय फ्रेडरिक्स, सादिक मोहम्मद, टर्नर, सुनील तथा डेनिस ऐमिस।

प्र० : निम्न को क्रम में दो-एलन नाट, फारुख इंजीनियर, मार्श, मरे एव किरमानी।

उ० : नॉट, मार्श इंजीनियर, मरे व किरमानी।

जयपाल चावला "कामठी",—नागपुर

प्र० : विश्वनाथ ने आजतक कितने शतक बनाये हैं और वे कहां-कहां पर बनाये है ?

उ० : आजतक विश्वनाथ ने ८ शतक बनाये हैं—एक पोर्ट आफ स्पेन वेस्टइंडीज को छोड़ बाकी सारे भारत में बने हैं।

लालबहादुर श्रीवास्तव—मन्दसौर

प्र० : विश्व का इस समय सर्वश्रेष्ठ बालर कौन है ?

उ० : आस्ट्रेलिया का डेनिस लिली—हाल में आस्ट्रेलिया को थामसन के अस्वस्थ होने के बाद जिताने का श्रेय लिली को ही रहा है। परन्तु इस विषय में कुछ निश्चित कहना कठिन है। क्योंकि वेस्ट इंडीज तथा आस्ट्रेलिया के पास अच्छे तेज गेंदबाजों की काफी अच्छी संख्या है। अभी वेस्ट इंडीज का ही उदाहरण लीजिये। पाकिस्तान जब हाल में वहां पहुचा था तो वहां के तेज गेंदबाज माइकेल होल्डिंग तथा वैनडेनियल्स किन्हीं कारणों से सीरिज़ के लिये उपलब्ध नहीं थे लोगों का विचार था कि इन नामी तेज गेंद बाजों की अनुपस्थिति पाकिस्तानी टीम के आक्रमण में बहुत कमजोर हो जायेगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वे टेस्टों के लिये बिल्कुल नये दो तेज गेंदबाज़ लाये। आशा के विपरीत उन्होंने जो हाथ दिखाये उसमें सब चकित रह गये। कॉलिन क्राफ्ट ने तो पहली ही सीरीज में ३३ विकेट लेकर पूर्व रिकार्ड की बराबरी कर डाली।

किशोर जीवतरामाणी—अकोला

प्र० : भारत के प्रथम धुंआधार बल्लेबाज कौन है ?

उ० : शुरू में भारत के पास बहुत अच्छे सी० के० नायडू तथा रणजी जैसे धड़ल्लेदार बल्लेबाज रह चुके हैं।

खेल-खेल में
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चना कुरमुरा
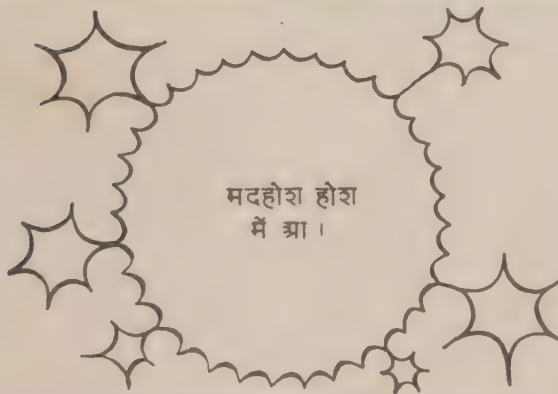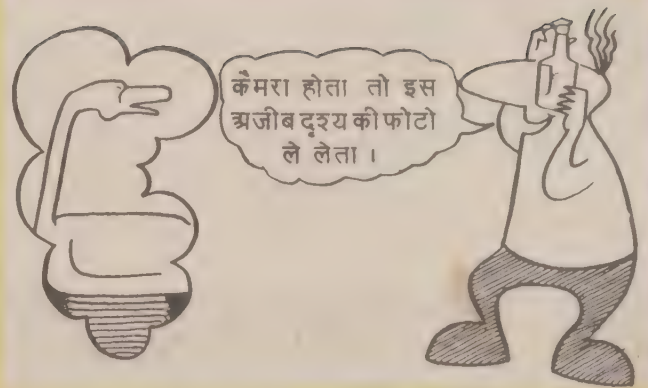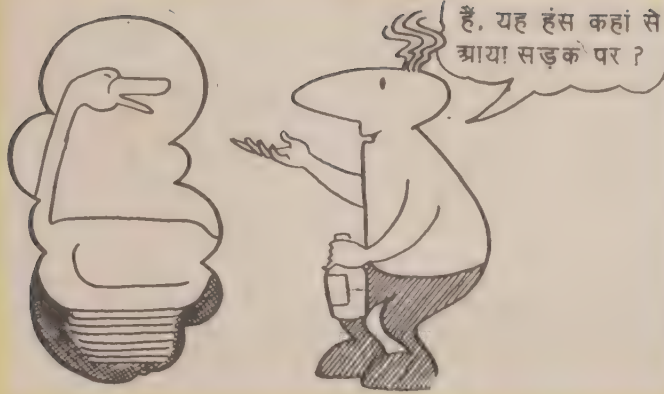
लड़ाई के दिनों में अमरीका के प्रेसीडेण्ट, रुजवेल्ट एक सभा में भाषण देने गये। संवाददाताओं को इस सभा में प्रेसीडेण्ट की सीट के पास ही बैठाया गया था, अतः सभा समाप्त होने के बाद सभी संवाददाताओं ने प्रेसीडेण्ट के सेक्रेटरी को इसके लिये धन्यवाद दिया। सेक्रेटरी ने मुस्कराते हुए कहा— 'धन्यवाद की इसमें कोई बात नहीं है। असल में आप लोगों के बैठने का प्रबन्ध इस तरीके से किया गया था कि श्रोताओं में से कोई यदि प्रेसीडेण्ट पर गोली चलाता, तो पहले आप ही में से किसी को लगती।'

★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

पंडित नेहरू साधारणतया काफी तेज चलते थे। रूस गये तो उनकी तेज चाल देख कर मार्शल बुल्गानिन ने उनके सेक्रेटरी से कहा— 'तुम्हारे प्रधानमंत्री बहुत तेज चलते हैं!'

'मैं समय के साथ चलता हूं।' सेक्रेटरी के जवाब देने से पहले ही पंडित जी बोल उठे।

☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

जी. के. चेस्टर्टन से एक बार किसी ने पूछा— 'क्या कोई केवल जेब में हाथ डाल कर घूमते रहने से अपना जीवन सुखपूर्वक बिता सकता है?'

चेस्टर्टन ने अपनी सहज मुस्कान के साथ जवाब दिया— 'निस्सन्देह! पर अपनी जेब में नहीं, दूसरों की जेब में'

☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

गंगा किनारे स्नान के लिये आये कुछ पण्डितों की परेशानी को समझ कर कबीर ने अपना लोटा मांज-धोकर उन्हें देना चाहा।

वे बोले, 'वहीं रख, वहीं रख! तेरा लोटा छूकर क्या अपवित्र होना है हमें?'

शान्त मुद्रा से कबीर ने कहा, 'गंगाजल से साफ करने पर यह लोटा पवित्र न हुआ तो कोई यहां नहा कर भी क्या पवित्र होता होगा!'

☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

सैयद इन्शा शिष्ट हास्य के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार वे नंगे सिर बैठे खाना खा रहे थे। नवाब आसफुद्दौला ने पीछे से आकर उनके सिर पर धौल जमा दी।

सैयद इन्शा ने पगड़ी सिर पर रखते हुए कहा—'हुजूर, बुजुर्गों ने सच ही कहा है कि नंगे सिर खाना मत खाओ, नहीं तो शैतान वार करता है।'

★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

पिकासो ने पोस्टमैन को अन्दर बिठाया। कमरे की दीवारों पर उसकी कृतियां टंगी थीं। इतने में ही पिकासो की दस वर्षीय लड़की कमरे में आई। उसकी पीठ थपथपाते हुए पोस्टमैन बोला, 'आपकी बच्ची पेंटिंग खूब करती है!'

☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★

प्रसिद्ध अणु वैज्ञानिक नील्स बोर के घर के दरवाजे पर घोड़े की नाल टंगी देखकर एक व्यक्ति ने उनसे पूछा, 'मुझे इस नाल को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या आप जैसे प्रमुख वैज्ञानिक भी अंधविश्वासी हैं?'

बोर ने हंसकर कहा—'मैंने एक वजह से इसे यहां टांगा है। इसके बारे में कहा जाता है कि आप इसमें विश्वास करें या न करें, यह आपको सौभाग्य लाती ही है।'

☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★
★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆★☆
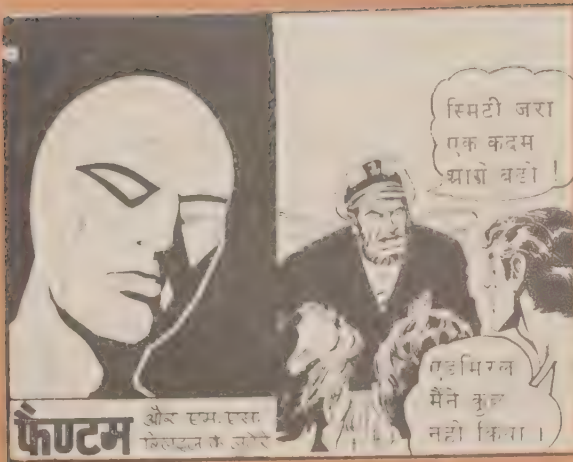
फैण्टम
और एस.एस.
स्मिटी जरा एक कदम आगे बढ़ो !
एडमिरल मैंने कुछ नहीं किया ।

नहीं, नहीं, तुमने तो केवल सैम को बेहोशी की हालत में देखा था और जब हम वहां पहुंचे, तुमने सारा सामान चुरा लिया ।
नहीं एडमिरल, नहीं ।

आपरेटर सब ठीक-ठीक लिख लिया न ?
हां, हमने तुम्हें ठीक समय पर पकड़ लिया ।
बन्दूक उठाने की कोशिश मत करना ।
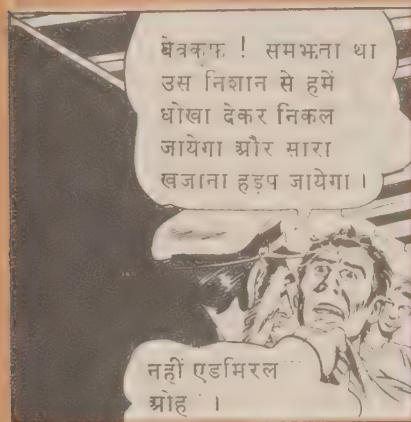
बेवकूफ ! समझता था उस निशान से हमें धोखा देकर निकल जायेगा और सारा खजाना हड़प जायेगा ।
नहीं एडमिरल ओह ।

दोस्तों ! देखो हमें क्या मिला !
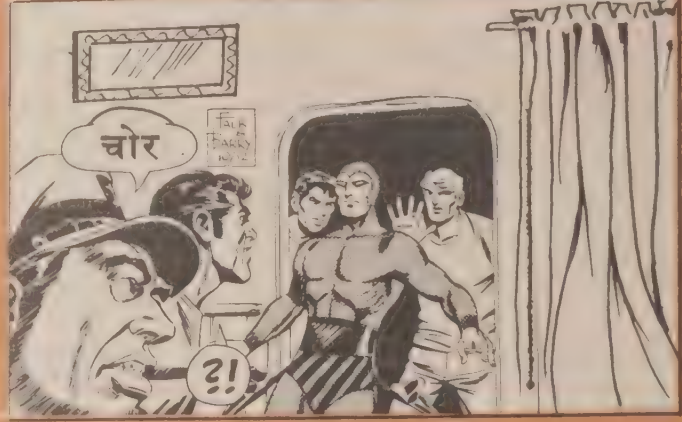
चोर
?!

हमने इसे पुल पर पकड़ा ।
कौन है वह ?
फैण्टम
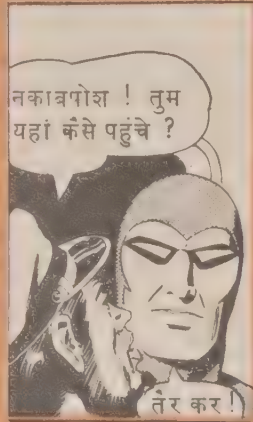
नकाबपोश ! तुम यहां कैसे पहुंचे ?
तैर कर !

माफ कीजिये सर ! आपके लिए बहुत जरूरी फोन है ।
हां ठीक है ...
बंगाला देश के राष्ट्रपति डा० लुआगा ।

एस. एस. हिल्टन के जहाज पर ।
इतने सख्त इन्तजाम के बाद भी तुम्हारी यहां आने की हिम्मत कैसे हुई ?
इन्तजाम कुछ विशेष नहीं है एडमिरल ।
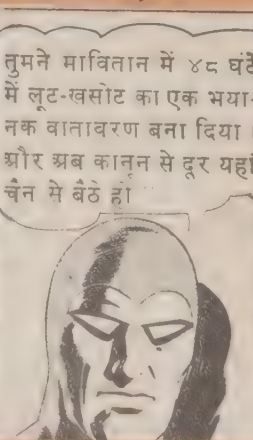
तुमने मावितान में ४८ घंटे में लूट-खसोट का एक भयानक वातावरण बना दिया । और अब कानून से दूर यहां चैन से बैठे हो
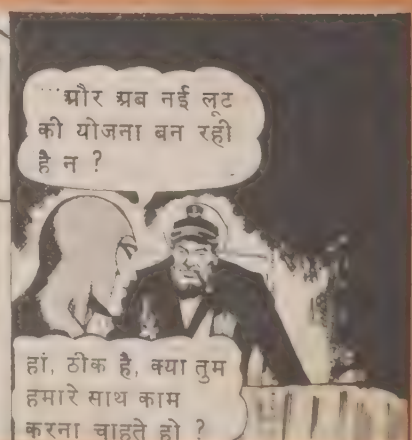
...और अब नई लूट की योजना बन रही है न ?
हां, ठीक है, क्या तुम हमारे साथ काम करना चाहते हो ?
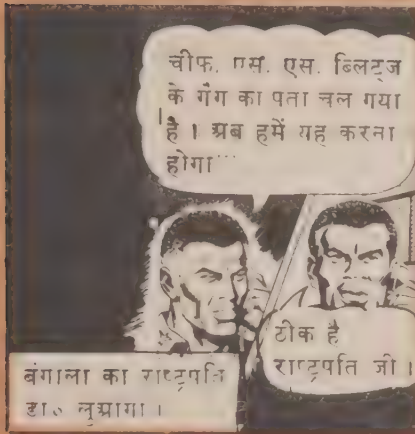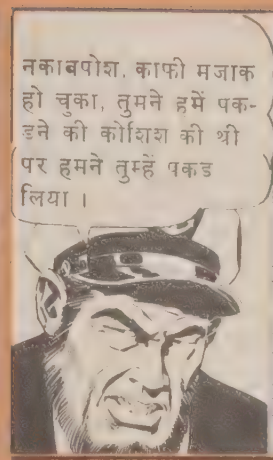
बोलते अक्षर

प्रभु की माया

... कहीं धूप कहीं छाया

रास्ता

रास्ता काटना

माथे पर त्यौरियां डालना

जु मिला

मिल जुलकर रहना

माथा

नेकी

नेकी पर चलना

लम्बी तानवा

पृष्ठ ९ से आगे

पढ़ने लगी। एकाएक वह फिर कांप उठी। खर्र-खर्र की आवाज उसके कानों में पड़ी तो उसने नजर उठाकर इधर-उधर देखा। मेज के उस पार अंधेरे में बेंच पर लेटा हुआ वह आदमी खर्राटे भर रहा था।

वह फिर उपन्यास में जूझने लगी, पर कुछ क्षणों के बाद अनायास ही उसकी दृष्टि सामने बेंच पर सोये हुए आदमी पर चली जाती थी और उसके बढ़े हुए श्वासों का क्रम कम न हो पा रहा था।

फिर धीरे-धीरे उसकी आँखें बोझिल होने लगीं। पढ़ते-पढ़ते वे अपने आप बन्द होने लगतीं। वह कुछ क्षण किसी खुमारी में खोई रहती और फिर चौंक कर जाग उठती। अपनी आँखें मलती और बड़ी सतर्क दृष्टि से चारों ओर देखती और देखती उस सामने लेटे हुए आदमी को।

परन्तु खुमारी का वह झोंका कुछ क्षण के लिए ही टलता। धीरे-धीरे वह फिर आंखों पर छाने लगता और वह फिर ऊंघने लगती। ऊंघते-ऊंघते वह फिर चौंक पड़ती और घबराई हुई-सी इधर-उधर देखने लगती।

वह बार-बार अपनी कलाई पर बंधी घड़ी को भी देखती जा रही थी। इस बार जब उसने घड़ी देखी तो उसमें बारह बजने में दस मिनट ही रह गए थे। गाड़ी का समय था बारह दस। केवल बीस मिनट रह गए थे।

किन्तु ये बीस मिनट उसे बीस घण्टे से अधिक बोझिल लग रहे थे। नींद ने उसकी दोनों आंखों को जकड़-सा लिया था। पलकों पर मन-मन का जैसे किसी ने बोझ रख दिया था। किन्तु उसका मस्तिष्क सचेत था। वह जानती थी इस समय उसे सोना नहीं चाहिए। सो जाने से गाड़ी छूट जाने का डर तो है ही, पर सोते में वह सामने लेटा हुआ आदमी कैसे भी उसे दबोच सकता है। तब न वह चिल्ला सकती है, न प्रतिरोध कर सकती है, न भाग सकती है।

और यही सोचते-सोचते उसे झपकी लग गई। उसका सिर भारी होकर मेज पर झुक गया। जागते हुए जिन संभावनाओं की वह कल्पना कर रही थी, वही सब उसके स्वप्नों में अवतरित होने लगीं। उसे लगा दो बांहें धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ती चली आ रही हैं। उन बांहों पर घने बाल हैं। खुले हुए पंजों की उंगलियां बड़ी मोटी हैं और उन मोटी-मोटी उंगलियों के आगे बड़े-बड़े नाखून हैं। और उसी सुप्तावस्था में वह भय से कांपने लगी। उसे लगा कोई व्यक्ति उसके बहुत निकट आ गया है। बिलकुल उसके पास, बस अब वह उसे दबोचना ही चाहता है...।

और झट से उसकी आंखें खुल गईं। आंखें खुलते ही वह चीख उठी, "क्या है...।" और उसने अपने आपको सिकोड़ लिया। वही आदमी बिलकुल उसकी कुर्सी के पास खड़ा हंस रहा था।

'मैंने कहा था न...तुम खुद ही सो जाओगी...हा...हा...हा चलो उठो...घंटी बज गई है। बस गाड़ी आने ही वाली है।'

और वह उसे फटी-फटी आंखों से देखती रही। वह आदमी झरने की तरह हंसी बिखेरता अपना सामान उठाने में लग गया।

उसने उठकर अपनी साड़ी को ठीक किया। अटैची खोलकर उसमें पुस्तक रखी। उसका अंग-अंग पत्तों की तरह अभी भी कांप रहा था जैसे किसी ने उसे पकड़कर झकझोर दिया हो।

पैसेंजर गाड़ी का इंजन फक-फक करता हुआ जैतीपुरा के उस छोटे-से स्टेशन पर आ खड़ा हुआ। जंगली पोखर में फिर हलचल आ गई।

'चलो चलो।' वह आदमी उसे बुलाता, इस तरह चल दिया जैसे वह उसी के साथ हो। उसके पास जनाना डिब्बा ढूंढ़ने का न तो समय ही था न शक्ति ही। वह उसी आदमी के पीछे मंत्रमुग्ध की भांति चल दी।

वे दोनों एक ही डिब्बे में घुस गए। ज्यादा भीड़ नहीं थी। दोनों ने आमने-सामने की जगह ले ली। उस आदमी ने अपनी सीट पर बिस्तर खोलकर बिछा लिया और उसने अटैची से एक चादर निकाल कर अपनी सीट पर बिछा ली।

'अच्छा मास्टरनी जी, मैं तो अब सोता हूं। पर धर्मपुर पर मुझे जरूर जगा देना। हा...हा...हा...। नहीं तो मैं नौ बजे तक सोता ही रहूंगा और गाड़ी कहां की कहां चली जाएगी...हा...हा...हा...।' उसने चश्मा उतारकर केस में रख लिया और आंखें बन्द किए सीधा लेटा रहा।

वह उस सोये हुए आदमी को एक टक देख रही थी। उसकी घनी मूछों के अन्दर से झांकते हुए होठों पर एक बड़ी लुभावनी मुस्कराहट अठखेलियां कर रही थी।

उसे देखते-देखते वह भी मुस्करा दी।•

दीवाना
पंचतंत्र
जोक्स की किताब खरीद कर ला रहे हो ? टायम काटने के लिये अच्छी चीज़ है।
मैं तो इसे टायम काटने के लिये नहीं, बल्कि लकड़ी काटने के लिये खरीद लाया हूं।
लकड़ी ?
इस लकड़ी को यहां से काटना है फिर यह छड़ी बन जायेगी। फिर मैं माल रोड पर सूट पहन कर छड़ी झुलाता हुआ चलूंगा।
लेकिन जोक्स की किताब से कहीं लकड़ी कटी है ?
मेरे पीछे-पीछे आओ। तुम्हें खुद पता लग जायेगा।
वह देखो मगरमच्छ लेटा है तुम उसे अच्छे-अच्छे जोक्स पढ़ कर सुनाना बाकी मैं देख लूंगा।
चलो !
हा हा हा हा हा हा हा
......और वह सीढ़ियों से नीचे गिर गया। ही ही ही ही ही।
यह मुँह फाड़ कर हंसता रहेगा और मैं इसके आरे जैसे दांतों से छड़ी काट लूंगा।

फुटबाल कैसे खेलें

गोलकीपर

फुटबाल की टीम में गोलकीपर का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। फुट-बाल के खेल में जो टीम जितने अधिक गोल करती है, उसी की विजय होती है। उसका काम गेंद को गोल-पोस्ट और क्रास-बार के भीतर आने से रोकना है।

अच्छा गोलकीपर न केवल अपने गोल की रक्षा करता है, बल्कि अपनी टीम के खिलाड़ियों का उत्साह भी बढ़ाता है। उस को गेंद पकड़ने, थ्रो करने और किक लगाने का अच्छा अभ्यास होना आवश्यक है। गोल-कीपर को इस बात का भी पूर्वानुमान करना पड़ता है कि गेंद किस दिशा में आने वाली है; क्योंकि गोलकीपर को गेंद हाथ से पक-ड़ने का अधिकार होता है। इसलिए वह कई बार प्रतिद्वन्द्वी अथवा विपक्षी टीम के खिलाड़ो के पैरों में से गेंद को हाथों से उठा लेता है, किन्तु यह कार्य व्यवहार में बहुत कठिन होता है। अनेक बार ऐसा भी होता है कि वह गेंद को छीनने के लिए ड्राइव करता है और विपक्षी टीम का खिलाड़ी गेंद को फुर्ती से गोल में डाल देता है। इसके लिए उसे बड़े साहस, हौंसले और सतर्कता से काम लेना पडता है।

उस समय जब गद लुढ़कती हुई गोल की तरफ आ रही हो, गोलकीपर का कर्त्तव्य है कि वह अपनी दोनों टांगों को बन्द करके नीचे की तरफ झुक जाए और गेंद को हाथों में उठा ले। फिर वह उसे अपने किसी खिलाड़ी की तरफ फेंक सकता है अथवा किक कर सकता है।

यदि गेंद जमीन से थोड़ी ऊंची आ रही हो तो गोलकीपर का कर्त्तव्य है कि अपनी कमर झुकाकर गेंद को पेट के सहारे या छाती से लगाकर रोक ले। यदि गोलकीपर गोल-पोस्ट के एक किनारे पर खड़ा हो और गेंद दूसरी तरफ आ रही हो तो उसे उस ओर ड्राइव करना चाहिए या उस ओर गिर जाना चाहिए और गेंद को मजबूती ,के साथ पकड़ लेना चाहिए।

यदि गेंद बहुत ऊंची आ रही हो और गोलकीपर के लिए उछलकर उसे अपने हाथों से पकड़ पाना कठिन हो तो उसे चाहिए कि वह उछलकर उस गेंद को अपनी मुट्ठी, हथेली अथवा उंगलियों द्वारा क्रास-बार के ऊपर से पीछे की तरफ फेंक दे। गोलकीपर के कार्य और उसके महत्व को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि गोलकीपर अपनी टीम की रक्षा की अन्तिम पंक्ति है।

फुल बैक्स

फुटबाल के खेल में फुलबैक को टीम का रक्षक माना जाता है। कुशल फुल बैक खिलाड़ी वही माना जाता है, जो आल-राउण्ड हो और दोनों पैरों से भलीभांति खेल सकता हो। उसे गेंद को सिर से मारने की कला और गेंद छीनने की कला में निपुण होना आवश्यक है। लेफ्ट फुलबैक और राइट फुल बैक—दोनों खिलाड़ियों में अच्छा तालमेल होना चाहिए।

जब फुल बैक के पास गेंद आए तो उसे टच-लाइन से बचकर खेलना चाहिए। उसे इस बात की भी समझ होना आवश्यक है कि उसको कितने समय तक गेंद अपने पास रखनी है, ताकि उसके साथी अपनी-अपनी जगहों पर भली प्रकार से तैनात हो सकें।

फुलबैक को कार्नर किक और फ्री किक लगाने का भी अच्छा अभ्यास होना चाहिए। कई स्थितियों में जरूरत पड़ने पर वह गेंद को अपने ही गोलकीपर की ओर धीरे से खिसका देता है।

अच्छे गोलकीपर की तरह एक अच्छा फुल बैक प्रबल आक्रमण शुरू कर सकता है। इसीलिए कहा जाता है कि बहुधा विपक्षी टीम पर आक्रमण अपने ही पेनल्टी एरिया से शुरू होता है।

अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण फुल-बैक अवसर के अनुसार अपने बायें अथवा दायें पैर से किक करता है।

चरणदास

आज रामलीला मैदान में बड़े सन्त आये हुये हैं। मैं उन्हीं का भाषण सुनने जा रहा हूँ।
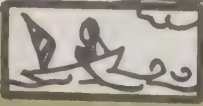
लौटने पर
वाह! कितनी मधुर वाणी में सन्त जी ने भाषण दिया। उनकी एक-एक बात लाखों रुपये के समान थी। उनकी एक बात से मैं बहुत प्रभावित हुआ

कौन-सी बात, जरा मैं भी तो सुनूं!

संत जी ने कहा था कि जिसका बेटा मूर्ख होता है उसका पिता अकलमंद होता है और जिसका पिता मूर्ख होता है उसका बेटा बड़ा हो कर विद्वान और अकलमंद बनता है।

सच, सन्त जी तो वाकई महान् हैं। उनकी इस बात से मेरे सिर से एक बोझ तो उतरा।
कैसा बोझ?

यही कि कम से कम मेरा बेटा तो बड़ा हो कर विद्वान और अकलमंद बनेगा।
ही ही ही...

सत्य पर विचित्र

प्रमुख देवता

रैंड इण्डियनों का प्रमुख देवता सूर्य है, किन्तु जहां मक्का की खेती होती है वहां 'मक्का का देवता' का स्थान ही प्रमुख है। उनका मत है कि धरती ही सबकी माता है और यही समस्त प्रकृति को जीवित रखती है। ये लोग सभी जड़-चेतन वस्तुओं को अपने भाई समझते हैं। यदि वे कोई वृक्ष काटते हैं तो पहले उसका प्रायश्चित और पूजा की जाती है। यदि वे खालों के वस्त्र बनाने के लिए किसी पशु को मारते हैं तब भी वे ऐसा ही करते हैं और इस प्रकार 'जीवन के देवता' को शान्त करने का प्रयत्न करते हैं।

इन लोगों में यदि किसी के पास बहुत-सा धन है तो उसे बड़ा व्यक्ति नहीं माना जाता। इसके विपरीत यदि कोई बहुत दान करता है और अपनी सबसे प्रिय वस्तु दूसरे को दे देता है तो उसे बहुत महान और बड़ा समझा जाता है। वहां के शक्तिशाली व्यक्ति अनाज पैदा करते हैं और अन्य सब लोग उसे बांटकर खाते हैं।

हिरण तथा भैंसा नृत्य

जब वर्ष समाप्त होता है तो ये लोग इस बात का प्रयत्न करते हैं कि सूर्य दक्षिण में न चला जाय और अगली फसल के समय फिर उनके पास आ जाय। इसके लिए ये लोग बड़े दिन के पास दो-तीन दिन नृत्य-समारोह करते हैं। इसी अवसर पर वहां के गवर्नर की आज्ञा से इनके भैंसे और हिरण के प्रसिद्ध नृत्य होते हैं। इन नृत्यों में असली भैंसों तथा हिरणों के सिर प्रयोग में लाए जाते हैं। इन्हें ये लोग अपने सिरों पर पहन लेते हैं। ये नृत्य हर वर्ष ६ जनवरी को ही किए जाते हैं। इस दिन इनके नये गवर्नर की नियुक्ति होती है।

हिरण का नृत्य प्रारम्भ होने की भी एक विचित्र कथा है। हजारों वर्ष पहले एक बार इनके देश में अकाल पड़ा। जंगलों में कोई शिकार भी नहीं मिलता था। उस समय वहां के वृद्ध पुरुषों को एक देवता दिखलाई दिया। देवता ने उनसे कहा, 'तुम व्यर्थ हत्या मत करो। तुम उन्हीं पशुओं का शिकार करो जो तुम्हें भोजन के लिए आवश्यक हों।'
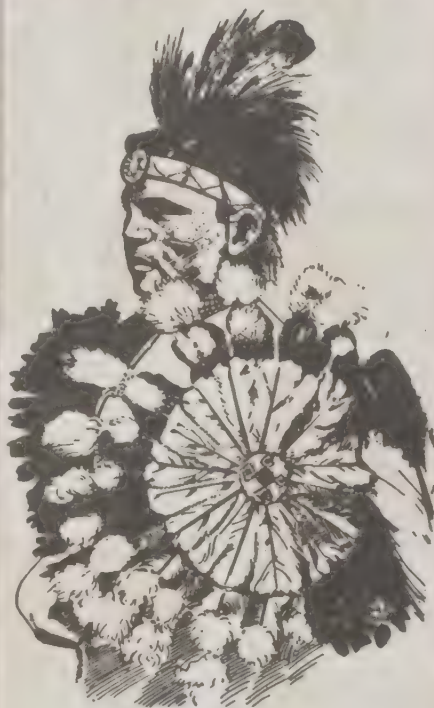
अमेरिकी भारतीय

सन १४९२ में जब कोलम्बस ने प्रथम बार अमेरिका की खोज की तो उसने इस नये प्रदेश को भारत का एक भाग समझा। कोलम्बस ने भारत पहले कभी नहीं देखा था। इसी कारण उसने वहां के लोगों का नाम 'भारतीय' रख दिया। जब इस भूल का पता चला तो अमेरिका के उन लोगों का नाम बदलने के अनेक प्रयत्न किए गये किन्तु उस समय ये लोग इतने प्रसिद्ध हो चुके थे कि उनका 'भारतीय' नाम नहीं बदला जा सकता था। धीरे-धीरे उनको भारतीय के स्थान पर अमेरिकी भारतीय या 'रैंड इण्डियन' कहा जाने लगा।

यद्यपि आज अधिकांश अमेरिकी ईसाई हो गये हैं किन्तु उनमें से अब भी बहुत-से ऐसे हैं जो अपने प्राचीन धर्म के ही अनुयायी हैं और अपनी पुरानी परम्पराओं को किसी भी भांति छोड़ने को तैयार नहीं।

आज के नृत्य

वहां बहार के प्रारम्भ में हरे अनाज के सामूहिक नृत्य किये जाते हैं। स्त्रियां और पुरुष अपने को रंग-बिरंगे वस्त्रों से खूब सजाते हैं और सूर्य तथा वर्षा के देवता से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके बीजों को उगाने के लिए रोशनी और पानी दें।

इसके बाद भी वहां अनेक अवसरों पर नृत्य किए जाते हैं। इनमें अनाज के उगने तथा अच्छी फसल होने के नृत्य प्रमुख हैं। ये नृत्य बीज को बोने से लेकर फसल कटने तक चलते हैं। इन नृत्यों की विशेष कोई तिथि नहीं होती। जब समय आता है तो गांव का सरदार अपने मकान पर चढ़ जाता है और उसके सबसे ऊपरी भाग पर जाकर घोषणा करता है—"कल बीज बोना है।" बस, उसी समय से पहले नृत्य की तैयारी प्रारम्भ हो जाती है। इन नृत्यों में भाग लेना हर व्यक्ति अपना कर्तव्य समझता है।

यहां इन अवसरों पर नृत्यों के अतिरिक्त दौड़ें भी होती हैं जिनमें युवक ही भाग सकते हैं। इन दौड़ों में भाग लेने वाले अपने शरीर को सफेद रंग में रंगते हैं और सिर पर सफेद पर लगाते हैं। इन परों को ये 'गति का प्रतीक' मानते हैं। इसके बाद प्रदेश के दो भागों के युवक दो दलों में विभक्त हो जाते हैं और मैदान के दो ओर खड़े हो जाते हैं। तब दौड़ाने वाला 'ओम मा पा' कहकर चिल्लाता है और प्रत्येक दौड़ने वाले को उकाब के पर से छूता है। पर से छूते ही वह भागना प्रारम्भ कर देता है। दोनों दलों के युवक मैदान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक भागते रहते हैं। जो दल हार जाता है उसे दण्ड मिलता है।
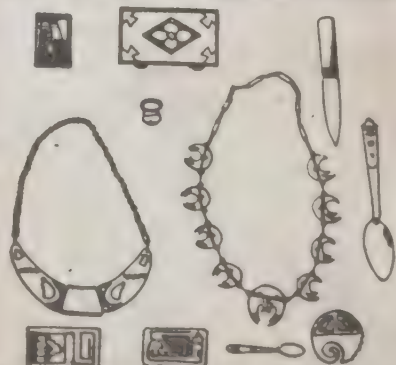
रैंड इण्डियनों के कुछ गहने

गेंद ढूंढ़िये प्रतियोगिता का सही हल

विजेता

(१) मनोजकुमार साहू–राजनांदगांव

(२) एच·के· टासानन्दा जी–उल्हासनगर
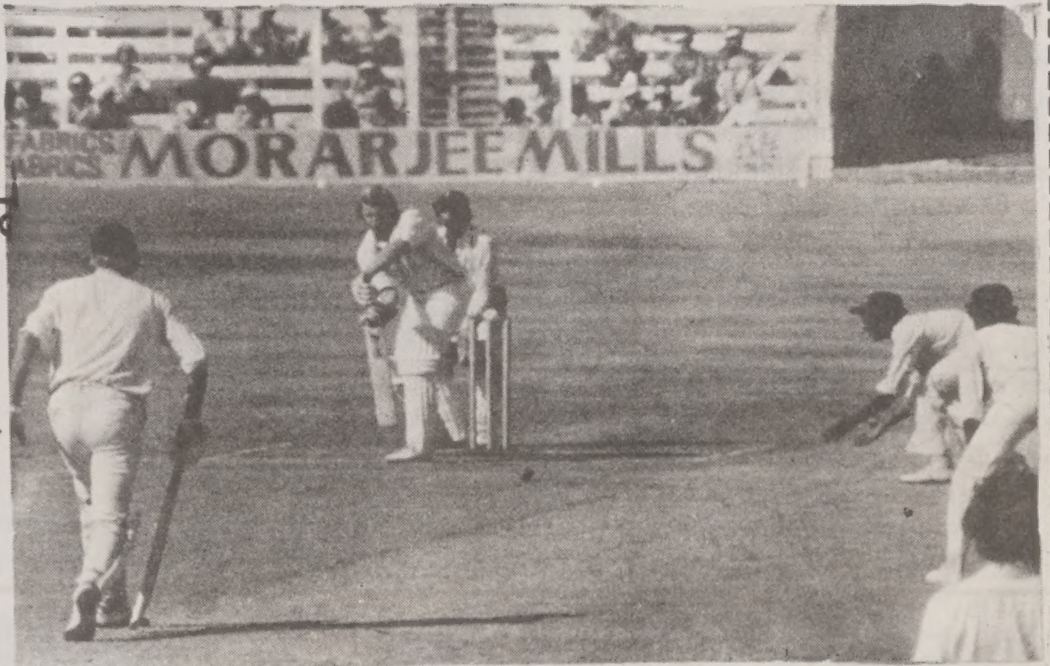
गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता

३० रु० इनाम

आपको यह बताना है कि इस तस्वीर में लक्ष्मी छाया के पीछे कौन सी तारिका है? और क्यों छुपी हुई है?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-२। पहुंचने की अन्तिम तिथि १८ जून ७७ एक पोस्टकार्ड पर एक हल भेजें!

चना कुरमुरा.

चुप ! कोर्ट चालू है...

वकील (अपने मुवक्किल से) : अगर आप किसी गंभीर अपराध में नहीं फंसे हैं तो मैं आपका केस लूंगा ; यदि आप किसी मामूली चक्कर में फंसे हैं और उससे छुटकारा चाहते हैं तो मेरा पार्टनर आपका केस लेगा ; यदि आप किसी चक्कर में फंसे नहीं हैं, लेकिन फंसना चाहते हैं तो मेरा लड़का आपका केस लेगा ; उसने अभी हाल ही में वकालत की डिग्री ली है ।

●

मुकदमा तलाक का था । पत्नी का कहना था कि पति ने चाकू से उस पर वार किया था । जज को चेहरे पर कहीं घाव का निशान तक नहीं दिखाई दिया । उन्होंने महिला से पूछा, 'यह कब की बात है ?'

महिला ने कहा, 'तीन दिन पहले की।'

जज : 'लेकिन तुम्हारे चेहरे पर कोई निशान तो है नहीं ।'

महिला : 'निशान का सवाल कहां पैदा होता है ? मेरे पास गवाह जो मौजूद हैं ।'

यह तो निश्चित था कि उसने खून किया था । चिन्ता भरे स्वर में उसने वकील से पूछा, 'आपको विश्वास है कि मेरे साथ न्याय होगा ?'

वकील ने सांत्वना दी, 'मुझे नहीं लगता । जज साहब फांसी की सजा के सख्त खिलाफ हैं ।'

●

चश्मदीद गवाह एक ग्रामीण था ।

वकील ने उससे कहा, 'अब मेंबराने जूरी को बताओ कि उस घर की सीढ़ियां कहां जाती हैं ?'

'कहां जाती हैं ?' गवाह कुछ समझ नहीं पा रहा था और सिर खुजला रहा था ।

वकील ने पूछा, 'हां भाई, बताओ उस घर की सीढ़ियां कहां जाती हैं ?'

गवाह बताने की कोशिश करने लगा, 'अगर मैं ऊपर खड़ा होऊं तो सीढ़ियां नीचे सीढ़ियां ऊपर की ओर जाती हैं ।'

●

शराब में मिलावट का अभियोग उस पर । उसके वकील ने प्रमाण के तौर जब्त की हुई शराब जज को चखाई । पूछा, 'हुजूर, क्या सोचते हैं आप, यह मि वटी शराब है ?'

जज ने होंठ पर जीभ फेरते हुए क 'हमें फिलहाल और प्रमाण चाहिए ।'

अधेड़ उम्र की महिला अपनी तकलीफ बयान कर रही थी—'पीठ में दर्द रहता भूख नहीं लगती, सिर में दर्द रहता है, अ भी कमजोर हैं...'

डाक्टर ने पूछा—'आपकी उम्र है ?'

महिला—'जी अगले महीने २८ की जाऊंगी ।'

'ओह, मुझे तो लगता है आपकी य दाश्त भी जबाव दे रही है ।' डाक्टर गंभीरता से कहा ।

ण कुमार 'पाठक', गांव व माहिल गहिला, जालन्धर ाब)२१ वर्ष, लड़के-लड़कियों त्रता, फोटोग्राफी व मस्ती मना।

सुभाष चन्द अरोरा पुत्र मदन लाल, जागेश्वर, मुरसानगेट, हाथरस, २० वर्ष, लड़कों से पत्र मित्रता, पत्रोत्तर जल्दी से जल्दी देना।

देव आनन्द शर्मा, २४७५ नाई-वाड़ा, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बाल पाकेट बुक्स पढ़ना और जानवर पालना।

शरदेन्दु शर्मा, २-सी-७२, नेहरू नगर, गाजियाबाद, १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना और हवाई जहाज के साथ दौड़ना।

सैयद अली जैदी द्वारा श्री विश्वनाथ सोनी, मामू भांजे की कबर, २० वर्ष, छोटे बच्चों के साथ खेलना व पत्र व्यवहार करना।

राजुलाल श्रेष्ठ, ६६/सी.२४ असनटोल, काठमांडो, नेपाल, २० वर्ष, पत्र मित्रता करना व लड़कों से दोस्ती करना और मछली पालना।
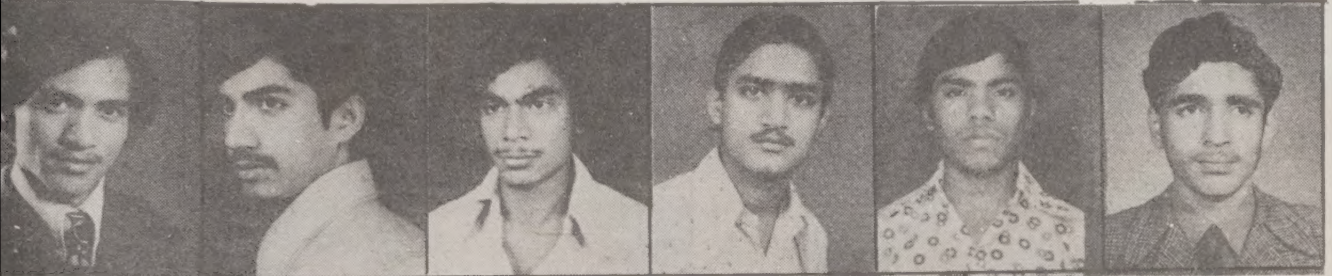
मगोपाल 'आशा', के० जी० ास, सालाखटोल, भक्तपुर-, नेपाल, २१ वर्ष, पत्र-मैत्री का देखना और साईकिल ाना आदि।

अशोक कुमार गुलाटी, अशोक जनरल स्टोर, स्कूल रोड, जगाधरी, अम्बाला, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र मित्रता करना, गरीबों की सहायता।

गोपाल कृष्ण, ई० के० रोड, एन० ए० एस० कालिज के सामने, मेरठ-१, १८ वर्ष, नए-नए मित्र बनाना, शेरो शायरी करना आदि।

विनोद के० गुप्ता 'काका' द्वारा मैसर्ज जी. टी. एच. मलसीसर हाऊस, स्टेशन रोड, जयपुर-६, १६ वर्ष, फिल्में देखना, नावल पढ़ना इत्यादि।

शिवशंकर जायसवाल, बी. आर. एस. एक्स. ब्लाक नं. २१, फ्लाट नं. १६, कलकत्ता-५४, १६ वर्ष. दीवाना पढ़ना, दूसरे के साथ मित्रता करना।

देविन्द्र चौहान, चौहान निवास 'दली', शिमला-१२, हिमाचल प्रदेश, १६ वर्ष, घास काटना. गप्पें मारना और बाल बढ़ाना आदि।

कान्त, लार्ड कृष्णा रोड, र्श नगर, दिल्ली-३३, १४ , टिकट इकट्ठे करना व पत्र ता करना और भारत की करना।

अन्जनी कुमार अग्रवाल द्वारा महावीर टाकीज पत्थल गांव, रायगढ़, १६ वर्ष, फरमाइश भेजना, दोस्ती करना और जुआ खेलना आदि।

अविनाश 'अनजान', व्यास जी की हवेली, शाहपुरा(भीलवाड़ा) १८ वर्ष, लड़के एवं लड़कियं से पत्र मित्रता करना, रोते हुए को हंसाना, दीवाना पढ़ना।

मनोहर लाल, सुन्दर क्लाथ स्टोर, शास्त्री मार्कट, मेन रोड, रांची (बिहार), १६ वर्ष, पत्र मित्रता, रेडियो सुनना, दीवाना पढ़ना आदि।

चन्द्र कुमार वरनजानी, ८६ गौस गंज (वजीर गंज थाने के पीछे) लखनऊ १८ वर्ष, दीवाना, कहानियां व चुटकुले पढ़ना, पत्र मित्रता करना।

रमेश शर्मा द्वारा हनुमान शर्मा, सरिया फैक्ट्री के पीछे, रानी बाजर, बीकानेर, १५ वर्ष, पत्र मित्रता, डाक टिकट संग्रह, पढ़ाई करना।

न्दर लक्ष्मीनारायण मिगवाल, वा सदन बिल्डिंग, ब्लाक नं. ०४, नागपुर-२, १५ वर्ष, ढ़ना, सिनेमा देखना, पत्र मत्रता आदि।

श्रवण कुमार मल्होत्रा द्वारा श्री सुरेश कुमार मल्होत्रा, गढ़ मुक्तेश्वर, मेरठ, १५ वर्ष, मित्रों को पत्र लिखना व मित्रों के साथ घूमना।
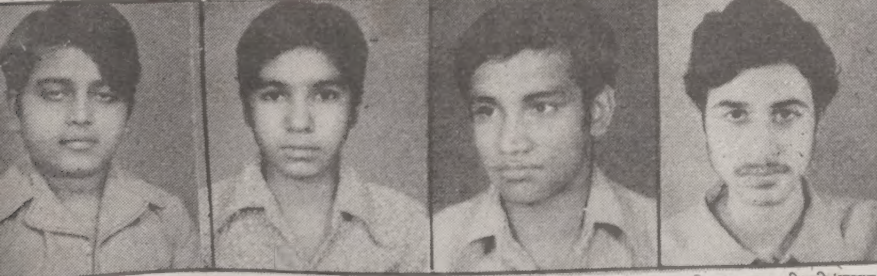
सुदामा निरंकारी, धीरूमल गागनदास फोर्ट रोड, रीवा (म० प्र०), २० वर्ष, नए दोस्त बनाना और पत्र मित्रता करना इत्यादि।

हरविन्दर कुमार पीपली 'चन्दन' शाहबाद मारकड़ा, कुरुक्षेत्र (हरियाणा), १६ वर्ष, पत्र मित्रता, फिल्मी पुस्तकें पढ़ना, मजाक करना, हंसना आदि।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

पता ____________________

____

आयु ________ शौक ____________________

____

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

साप्ताहिक भविष्य

६ जून से १२ जून ७७ तक

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : किसी प्रियजन से मिलाप एवं उसके सहयोग से आप कुछ कामों में सफलता एव गम्भीर समस्याओं पर काबू पा सकोगे. व्यापार से यथार्थ लाभ, नौकरी वालों के लिए कोई नया साधन बनेगा।

वृष : मंगलवार तक घरेलू वाद-विवाद, चालू कामों में रुकावट व हानि, सेहत खराब, यात्रा पर न जाएं, अन्य दिनों में वातावरण ठीक रहेगा, व्यापार अग्रसर होगा, नई योजना से लाभ पहुंचेगा।

मिथुन : काफी संघर्षमय दिन हैं, कई नई उलझनों से जूझना पड़ेगा, कामों में सफलता मिलती रहेगी, व्यवसाय ठीक ही चलेगा अधूरे काम बनते नज़र आवेंगे, सफर में लाभ परन्तु बुध/गुरुवार यात्रा न करें।

कर्क : कारोबार में उन्नति के चान्स मिलेंगे या आय का नया साधन बनेगा, सरकारी कामों में सफलता, अधूरे पड़े काम पूरे होते जावेंगे, यात्रा में सुख, कोई आशा पूरी होगी, शुक्रवार से रविवार तक दिन नेष्ट हैं।

सिंह : धर्म-कर्म में रुचि रहेगी, वातावरण अनुकूल रहेगा, यात्रा सफल रहेगी, व्यापार से अच्छा लाभ, हालात भी आपके नियन्त्रण में चलेंगे, समय सब प्रकार से सानंद व्यतीत होगा, आय में वृद्धि होगी।

कन्या : मंगलवार तक आर्थिक कठिनाई रहेगी, बने काम में बिगाड़, शारीरक कष्ट का भी भय है, यात्रा न करें, अन्य दिनों में व्यापारिक दशा ठीक चलेगी, सेहत व सफर भी ठीक रहेगा।

तुला : इन दिनों सफर अचानक भी और किसी खास कार्य के लिए करना पड़ेगा, घरेलू सुख मिलेगा, शुभ कार्य भी सम्पन्न होगा, सन्तान से सुख, व्यय अधिक, व्यस्तता भी काफी रहेगी।

वृश्चिक : काफी संघर्षमय दिन हैं, जो भी कार्य करें बड़ों के परामर्श से एवं सोच विचार कर करें, मानसिक परेशानी रहेगी, परिवार से सुख व सहयोग, घरेलू सुख साधनों में वृद्धि होगी।

धनु : राजकर्मचारियों से मेल जोल बढ़ेगा, सरकारी कामों में सफलता मिलेगी, यात्रा सफल रहेगी, घरेलू व धन सम्बन्धी चिन्ता बराबर रहेगी, किसी खास कार्य में परेशानी होगी, शत्रु तंग करेंगे।

मकर : मुकदमे आदि में परेशानी, काफी तनावपूर्ण दिन हैं, चिन्ता बढ़ेगी, नई प्रकार की परेशानियों से लड़ना होगा, यात्रा साव-धानी से करें, ऋण न लें और न दें, आर्थिक दशा समान रहेगी।
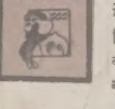
कुम्भ : बुध गुरुवार के दिन नेष्ट हैं, मुकदमे में परेशानी व निराशा, घरेलू हालात से चिन्ता, यात्रा में कष्ट, अन्य दिनों में उच्च-वर्ग के अधिकारियों से मेल मिलाप होगा, कार्यों में सफलता मिलेगी।
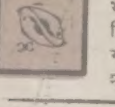
मीन : व्यापार में उन्नति, शुभ कामों में भागदौड़ काफी रहेगी एवं सफलता भी मिलेगी, जिससे दिनचर्या काफी अस्त-व्यस्त रहेगी, समय हंसी खुशी से व्यतीत होगा, शुक्रवार से रविवार तक सावधानी से रहें।

सिम्पल कपाड़िया

विजय भारद्वाज

फिल्म 'अनुरोध' के प्रदर्शन के बाद यह साबित हो गया है कि सिम्पल कपाड़िया को जो प्रसिद्धि बिना कोई फिल्म रिलीज हुए प्राप्त हुई थी वह गलत नहीं थी। यह वास्तव में उसकी हकदार हैं। इसी फिल्म 'अनुरोध' से इनका फिल्मी कैरियर शुरू हुआ है और दर्शकों ने इनके अभिनय की दिल खोल कर तारीफ की है। इस फिल्म में नायक इनके जीजा जी (राजेश खन्ना) हैं।

हालांकि जितनी प्रसिद्धि इनकी बहन डिम्पल को अपनी एक मात्र फिल्म 'बाबी' से मिली थी उतनी प्रसिद्धि इनको प्राप्त नहीं हो पाई है। फिर भी सिम्पल कपाड़िया इस प्रसिद्धि से भी बेहद खुश हैं। उनका कहना है कि इन्सान को एक-एक सीढ़ी पर पांव रख कर ऊपर चढ़ना चाहिये ना कि छलांग लगा कर।

अपनी आने वाली फिल्म 'बिन बाप का बेटा' में यह हंसोड़ (कामोडियन) लड़की का रोल अदा कर रही हैं। नायक की सेक्रेटरी बन कर इन्होंने क्या-क्या ऊधम मचाया है यह फिल्म देखने पर ही आपको मालूम होगा। फिल्म 'चक्रव्यूह' में यह गम्भीर लेडी डाक्टर का रोल निभा रही हैं जो हर एक के दुख में शामिल हो जाती है। फिल्म 'मगरूर' में एक शर्मीली मुस्लिम कन्या का चरित्र निभा रही हैं। फिल्म 'शाका' में यह एक आवारा लड़की की भूमिका निभा रही हैं जो सड़क पर सीटी बजाती फिरती है। अब तक की फिल्मों में इनको अपना सबसे अच्छा रोल 'शाका' का ही लगा है।

सिम्पल कपाड़िया, जैसा कि इनका नाम है वैसी नहीं हैं। यह आम जिन्दगी में बेहद शरारती है। डिम्पल से इनकी आवाज काफी हद तक मिलती है। एक बार की

रंगीन चित्र →
छाया-रोमी

बात है, इनके जीजा जी (राजेश खन्ना) फिल्म 'बंडलबाज' की शूटिंग में व्यस्त थे। सिम्पल कपाड़िया के दिमाग में एक सिम्पल सी शरारत सूझी। इन्होंने फोन पर डिम्पल की आवाज में राजेश खन्ना को खूब खरी खोटी सुनाई और भविष्य में ना बोलने की धमकी भी दे दी। शाम को शूटिंग से निबट कर जब राजेश खन्ना घर पहुंचे तो उनका मुंह फूला हुआ था। डिम्पल ने नाराजगी का कारण पूछा तो राजेश खन्ना और भड़क उठे और फोन वाली बात दोहरा दी। तभी वहां सिम्पल कपाड़िया पहुंच गई और कहीं बात ज्यादा ना बढ़ जाये इस डर से सिम्पल ने सारी बात साफ-साफ बता दी और माफी भी हाथों हाथ मांग ली। ऐसी-ऐसी शरारत करने से यह कभी बाज नहीं आतीं। इनकी आनेवाली फिल्म और हैं उनका नाम है, 'मैं तुलसी तेरे आंगन की', 'मजनून' आदि......। इनका पता है—

सागर महल, जुहू बीच
बम्बई—४०००५४

सिम्पल और जितेन्द्र फिल्म 'शाक्का' में

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।